



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)
PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 406]

नई दिल्ली, शुक्रवार, अगस्त 23, 1985/भाद्र 1 1907

No. 406]

NEW DELHI, FRIDAY, AUGUST 23, 1985/BHADRA 1, 1907

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में
रखा जा सके।

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a
separate compilation

वित्त मंत्रालय

(आर्थिक कार्य विभाग)

(बैंकिंग प्रभाग)

नई दिल्ली, 23 अगस्त, 1985

अधिसूचनाएं

का. आ. 621(अ) :— केन्द्रीय सरकार बैंकारी विनियमन अधिनियम 1949 (1949 का 10) की धारा 45 की उपधारा (7) के अनुसरण में बैंक आफ कोचिन लिमिटेड, कोचिन के भारतीय स्टेट बैंक के साथ समामेलन की स्कीम के संबंध में, जो उक्त उपधारा के उपबंधों के अधीन केन्द्रीय सरकार द्वारा मजूर की गयी है, 26 अगस्त, 1985 को विहित लागू के रूप में विनिश्चित करती है।

[न. एफ. 17/11/85-बी. ओ. III (i)]

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Economic Affairs)

(Banking Division)

New Delhi, the 23rd August, 1985

NOTIFICATIONS

S.O. 621(E).—In pursuance of sub-section (7) of section 45 of the Banking Regulation Act, 1949 (10

of 1949), the Central Government hereby specifies the 26th August, 1985 as the prescribed date in relation to the scheme for the amalgamation of the Bank of Cochin Limited, Cochin, with State Bank of India which has been sanctioned by the Central Government under the provisions of the said sub-section.

[No. F. 17/11/85-B O. III(i)]

का. आ. 622(अ) :— केन्द्रीय सरकार ने बैंकारी विनियमन अधिनियम, 1949 (1949 का 10) की धारा 45 की उपधारा (1) के अधीन भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा किए गए आवेदन पर, उक्त धारा की उपधारा (2) के अधीन बैंक आफ कोचिन लिमिटेड के संबंध में उक्त धारा 45 की उपधारा (2) के अधीन अधिस्थगन आदेश किया है।

और भारतीय रिजर्व बैंक ने उक्त अधिनियम की धारा 45 की उपधारा (4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए भारतीय स्टेट बैंक के साथ बैंक आफ कोचिन लिमिटेड के समामेलन की स्कीम तैयार की है।

और रिजर्व बैंक ने उक्त धारा की उपधारा (6) के उपबंधों के अनुसार उक्त स्कीम का प्रारूप संबंधित बैंकों को भेजने के पश्चात् और उक्त स्कीम की बाबत प्राप्त सुझावों और प्रश्नों पर विचार करने के पश्चात्, वह स्कीम उपान्तरित की है और उसे मंजूर के लिए केन्द्रीय सरकार को भेजा है।

यस धन केन्द्रीय सरकार ने उक्त अधिनियम की धारा 45 की उपधारा (7) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए इसमें आने वाले विधियों और शर्तों के अधीन रखने हुए इस स्कीम की मंजूरी दे दी है।

1. बैंक आफ कोचीन लिमिटेड, कोचीन अंतरक बैंक होगा और भारतीय स्टेट बैंक अन्तरिती बैंक होगा।

2. ऐसी तारीख से जिसे केन्द्रीय सरकार उक्त अधिनियम की धारा 45 की उपधारा (7) के अधीन इस प्रयोजन के लिए विनिर्दिष्ट करे, (जिसे इसमें इसके पश्चात् विहित तारीख कहा गया है) अंतरक बैंक के सभी अधिकार, शक्तियाँ, मांग, दावे, हित, प्राधिकार, विशेषाधिकार, लाभ, आम्निया और जंगम और स्थावर सम्पत्ति, जिसके अंतर्गत भू-धृति से सभी प्राप्तियों या पट्टों या करों द्वारा प्राप्त और उनमें अन्तर्लिप्त/ भाटकों और अन्य धनराशियों और प्रसिद्धियों के अधीन परिसर, जिसके अधीन वे धारित हैं, सभी कार्यालय कर्मचारी, नियोजित उपस्कर संयंत्र, यंत्र और साधन वहाँ, कागज-पत्र, लेखन सामग्री स्टॉक, अन्य स्टॉक और सामान, सभी स्टॉक विनिधान और शेयर प्रतिलिपियाँ, हाथ में और प्रसिद्धि में प्राप्त सभी दुर्गुणों सभी हाथ की और लेखा की रोकड़ या बैंकों के पास निक्षेप लेखा (जिसके अंतर्गत मांग पर या मजबूत सूचना पर धन भी है) बुनियाद, सभी वहाँ श्रृण, बन्धक श्रृण और प्रतिभूतियों के फायदे सहित अन्य, श्रृण या उनकी कोई प्रत्याभूति अंतरक बैंक के कारबार के संबंध में सभी अन्य, यदि कोई, हों संपत्ति अधिकार और सभी प्रत्याभूतियों के प्राप्त संबंधों फायदे इस स्कीम के अन्य उपबंधों के अधीन रहते हुए अंतरिती बैंक की अन्तरिती हो जाएँगी और उसकी संपत्ति और आम्नियाँ बन जाएँगी और विहित तारीख से हों अन्तरक बैंक के सभी दायित्व कर्तव्य और फायदे इसमें इसके पश्चात् उपबंधित विस्तार तक और रीति के अंतरिती बैंक के दायित्व कर्तव्य और बाध्यताएँ होंगी और बन जाएँगी।

पूर्वगामी उपबंधों की व्यापकता पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना सभी संविदाएँ, विशेष, बंधपत्र, करार मुकदरानामें, विधिक प्रतिनिधित्व की मंजूरीयाँ और किसी भी प्रकृति की अन्य विषयों जो विहित तारीख के ठीक पहले आम्निवर्शाल या प्रभावशाली हो, अन्तरिती बैंक के विरुद्ध या उसके पक्ष में इसमें आगे उपबंधित विस्तार तक और रीति में प्रभावशाली होंगी और जैसे ही कार्यान्वित की जा सकेंगी मानों अन्तरक बैंक के स्थान पर अंतरिती बैंक उनमें प्रभावकार रहा हो, मानों वे अंतरिती बैंक के पक्ष में आने की गई हों।

यदि विहित तारीख को अंतरक बैंक द्वारा या उसके विरुद्ध कोई दावा, अपील या किसी भी प्रकृति की कोई अन्य विधिक कार्यवाही नबित है तो उसका उपशमन नहीं होगा, वह बन्ध नहीं होगी या उसपर किसी भी रूप से प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा, किन्तु वह इस स्कीम के अन्य उपबंधों के अधीन रहने हुए अन्तरिती बैंक के द्वारा या उसके विरुद्ध जारी रखी जा सकेगी और प्रदान की जा सकेगी।

यदि भारत से बाहर के किसी देश की विधि के अनुसार इस स्कीम के उपबंध उस देश में स्थित किसी ऐसी आम्नि या दायित्व को जो अन्तरक बैंक के उपक्रम के भाग हैं, अन्तरिती बैंक की अन्तरिती या उसमें निहित करने का प्रभाव स्वयं नहीं रखते तो ऐसा आम्नि या दायित्व के संबंध में अंतरक बैंक का कार्य-कलाप विहित तारीख से अन्तरिती बैंक के तत्काल के मुख्य कार्यपालक अधिकारी में स्थान हो जाएगा और वह मुख्य कार्यपालक अधिकारी ऐसी सभी शक्तियों का प्रयोग कर सकेगा तथा ऐसे सभी कार्य और दावे कर सकेगा जो वैधानिक रूप से इससे कार्यकलाप के परिसमापन के प्रयोजन के लिए अंत बैंक द्वारा प्रयुक्त की जा सकती या की जा सकती है मुख्य कार्यपालक अधिकारी ऐसा अंतरण और निहित करने के प्रयोजन के लिए ऐसी सभी कार्यवाहियाँ करेगा जो भारत के बाहर किसी ऐसे देश की विधियों द्वारा अपेक्षित हो और उन संबंध में मुख्य कार्यपालक अधिकारी या तो स्वयं या अपने द्वारा इस निमित्त प्राधिकृत किसी व्यक्ति के द्वारा अन्तरक बैंक की आम्नियाँ बमूल कर सकेगा या उसके दायित्व का निर्वाहन करेगा और उसके मूल प्रायोगों का अन्तरिती बैंक की अन्तरिती कर देगा।

3. अंतरक बैंक की बहियाँ बन्ध की जाएँगी और उनकी तुलना की जाएँगी और तुलन-पत्र प्रथम 27 अप्रैल 1985 को कारबार की समाप्ति पर और तत्पश्चात् विहित तारीख की ठीक पूर्ववर्ती तारीख को कारबार की समाप्ति पर तैयार किया जाएगा तथा तुलन-पत्र चार्टर्ड लेखाकार या चार्टर्ड लेखाकारों की किसी ऐसी फर्म द्वारा जो भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा इस प्रयोजन के लिए अनुमोदित या नामनिर्दिष्ट की गई हो संपरीक्षित और प्रमाणित कराएँ जाएँगी।

पूर्वगामी पैरा के उपबंधों के अनुसार तैयार की गई अन्तरक बैंक के तुलनपत्र की प्रत्येक प्रति अंतरक बैंक द्वारा प्राप्त हो जाने के पश्चात् यथासंभव जोध कंपनी रजिस्ट्रार के पास फाइल की जाएगी और तत्पश्चात् अन्तरक बैंक से तुलन-पत्र या लाभ और हानि लेखा तैयार करने या उसे सदस्यों के समक्ष प्रस्तुत करने या उसकी प्रतियाँ कंपनी रजिस्ट्रार के पास फाइल करने की या तुलन-पत्र और लेखों पर विचार करने के प्रयोजन के लिए या किसी अन्य प्रयोजन के लिए या कंपनी अधिनियम 1956 की धारा 159 के उपबंधों के अनुपालन करने के लिए वार्षिक माधारण अधिवेशन बुलाने की प्रेरणा नहीं की जाएगी और तत्पश्चात् अन्तरक बैंक के निदेशक बोर्ड के लिए उक्त अधिनियम की धारा 285 की अपेक्षानुसार अधिवेशन करना आवश्यक नहीं होगा।

4. 1—अन्तरिती बैंक, अन्तरक बैंक के परामर्श से निम्नलिखित उपबंधों के अनुसार अन्तरक बैंक की सम्पत्तियों और आम्नियों का मूल्यांकन करेगा और दायित्वों की संगणना करेगा, अर्थात्—

(क) सरकारी प्रतिभूतियों में निम्न विनिधानों का मूल्यांकन विहित तारीख की ठीक पूर्ववर्ती तारीख की नियमानुसार बाजार दरों पर किया जाएगा।

(ख) (1) सरकारी प्रतिभूतियों का मूल्यांकन भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा बैंक कारी नियमन अधिनियम 1949 की धारा 24 के प्रयोजन के लिए जारी की गई अधिसूचना में अधिकृत सिद्धांतों के अनुसार विहित रीति में ठीक पूर्ववर्ती तारीख को यथा विद्यमान रूप में किया जाएगा।

(2) केन्द्रीय सरकार की प्रतिभूतियों जैसे डाकघर-प्रमाणपत्र, ट्रेजरी वचन निक्षेप प्रमाणपत्र और केन्द्रीय सरकार की लघु बचत योजना के आधीन जारी की गई कोई अन्य प्रतिभूतियाँ या प्रमाणपत्रों का मूल्यांकन उनके अंकित मूल्य के आधार पर या उक्त तारीख को नकद प्राप्त मूल्य के आधार पर, इन दोनों में से जो भी उच्चतर हो किया जाएगा।

(3) जहाँ किसी सरकारी प्रतिभूति जैसे जमींदारी सम्मूलन बंधपत्र या अन्य सामान प्रतिभूति जिसका बाबत मूल किस्तों में देय है का बाजार मूल्य अनिश्चित नहीं है वही नहीं किया जा सकता है या किसी कारणवश यह माना जाता है कि वह उसका उचित मूल्य प्रदर्शित नहीं करता है वह अन्यथा उचित नहीं है तो प्रतिभूति का मूल्यांकन उक्त रकम पर किया जाएगा जो संश्लिप्त किए जाने वाले बचाया मूल और उसके ब्याज को किसी को उन कालावधि को जिसके दौरान ऐसा किस्त संदेय है सरकार द्वारा जारी की गई किस्त प्रतिभूति के मूल्य को जिसने प्रतिभूति का संबंध है और जिसमें ब्याज हो या लगभग ब्याज हो परिलक्षता है तथा अन्य सुसंगत बातों को ध्यान में रखते हुए युक्तियुक्त समझा जाता है।

(ग) जहाँ किसी प्रतिभूति, शेयर डिबेंचर, बंधपत्र या अन्य विनिधान का बाजार मूल्य उसके प्रामाण्य बातों से प्रभावित हो जाने के कारण युक्तियुक्त नहीं माना जाता है, वहाँ विनिधान का मूल्यांकन किसी युक्तियुक्त कालावधि के दौरान उसके प्रसिद्ध बाजार मूल्य के आधार पर किया जाएगा।

(घ) जहाँ किसी प्रतिभूति, गेजर या डिब्बे या अन्य विनिर्दिष्ट का बाजार मूल्य अभिविनिश्चित नहीं किया जा सकता है, वहाँ जारी करने वाले समुदाय की वित्तीय स्थिति, पूर्ववर्ती पांच वर्षों के दौरान उनके द्वारा संदत्त खातों और अन्य मुसंगत बातों को ध्यान में रखते हुए, केवल ऐसे मूल्य को, यदि कोई है, हिसाब में लिया जाएगा जो युक्तियुक्त मूल्य माना जाएगा।

(ङ) दावों की तुष्टि के लिए अर्जित परिसरों और अन्य सभी जंगम संपत्तियों और कहीं आस्तियों का मूल्यांकन उनके बाजारमूल्य पर किया जाएगा।

(च) फर्नीचर और फिक्सचर, स्टॉक की लेखन सामग्री और अन्य आस्तियाँ, यदि कोई हों, का मूल्यांकन प्रति वहाँ अधिकृत मूल्य के आधार पर या वसूली योग्य मूल्य के आधार पर, जो भी युक्तियुक्त समझा जाए, किया जाएगा।

(छ) अग्रिमों, जिनके अन्तर्गत ऋण की गई और भित्तिफाटे पर भुगतान की गई ऋणियाँ भी हैं, वही ऋणों और विविध आस्तियों की संक्षेप अंतर्लिखित बैंक द्वारा की जाएगी और प्रतिभूतियों जिनके अन्तर्गत उसके आवरक के रूप में धारित प्रत्याभूतियाँ भी हैं, अन्तरिती बैंक द्वारा परेशित और सत्यापित की जाएगी। परन्तु अग्रिम जिनके अन्तर्गत उनके भाग भी हैं, दो श्रेणियों में वर्गीकृत किए जाएंगे, अर्थात् "वे अग्रिम जिन्हें अच्छा और आसानी से वसूली योग्य माना गया है" और वे अग्रिम, जिन्हें आसानी से वसूली योग्य नहीं माना गया है और/या "जिनकी वसूली श्रुत या संकास्य है।

(ii) इस स्कीम के प्रयोजनों के लिए दायित्वों के अन्तर्गत ऐसे सभी सम्प्राप्ति दायित्व भी हैं, जिनके लिए अन्तरिती बैंक में विहित तारीख को या उसके पश्चात् अपने स्वयं के खेतों से उचित रूप से पून करने की आशा या अपेक्षा की जा सकेगी।

(iii) जहाँ किसी आस्ति का मूल्यांकन विहित तारीख को अवधारित नहीं किया जा सकता है, वहाँ वह भारतीय रिजर्व बैंक के अनुमोदन से, भागतः या पूर्णतः किसी पश्चात्तवर्ती तारीख को वसूली योग्य आस्ति के रूप में माना जाएगा।

किसी आस्ति के मूल्यांकन और/या किसी अग्रिम के वर्गीकरण और/या किसी दायित्व के अवधारण की बाबत अन्तरिती बैंक और अन्तरक बैंक के बीच कोई अमहमति है, तो वह मामला भारतीय रिजर्व बैंक को निर्दिष्ट किया जाएगा जिसकी राय अन्तिम होगी, परन्तु जब तक ऐसी राय प्राप्त नहीं हो जाती तब तक अन्तरिती बैंक द्वारा मर्दों या उसके भाग का मूल्यांकन इस स्कीम के प्रयोजन के लिए अन्तिम रूप में अपनाया जाएगा।

ऐसा करना आवश्यक होने की दशा में रिजर्व बैंक के लिए ऐसी तकनीकी राय प्राप्त करना आवश्यक होगा जो वह आस्ति की ऐसी किसी सब के मूल्यांकन या दायित्व की ऐसी किसी मर के अवधारण के संबंध में समुचित समझे और ऐसी राय अधिप्राप्त करने का व्यव अन्तरक बैंक को आस्तियों में से पूर्ण रूप से देय होगा।

पूर्वगामी उपबंधों के अनुसार आस्तियों का मूल्यांकन और दायित्वों का अवधारण दोनों बैंकों और उसके सदस्यों और लेनदारों पर आवधिक होगा।

5 अन्तरक बैंक की संपत्ति और आस्तियों के अन्तरिती बैंक को अन्तरण होने के प्रतिक्रम स्वरूप अन्तरिती बैंक इसे और निम्नलिखित खण्डों में वर्णित बिस्तार तक अन्तरक बैंक के दायित्वों का निर्वाहन करेगा, अर्थात्—

(क) विहित तारीख तक कर्मचारीवृत्त प्रतिभूति निक्षेपों सहित उस पर प्रयुक्त ब्याज, यदि कोई है, के साथ उस बैंक के पास

अन्तरक बैंक के किसी कर्मचारी द्वारा जमा की गई कोई धन राशि और विहित तारीख को नवी अन्य बाध्य दायित्व, जिसके अन्तर्गत निक्षेप नहीं है, संदत्त किए जाएंगे या उनका पूर्ण व्यवस्था की जाएगी।

स्पष्टीकरण:

इस पैरा के प्रयोजन के लिए विहित तारीख तक निक्षेप पर देय ब्याज संबंध निक्षेप भाग माना जाएगा।

(ख) प्रत्येक बचत बैंक खाते या चालू या खाते किसी अन्य निक्षेप को बाबत जिसके अन्तर्गत साक्षि निक्षेप, नकद प्रमाण-पत्र, मानिक निक्षेप, भाग या संक्षिप्त नूतना पर देय निक्षेप या अन्तरक बैंक के पास कोई अन्य निक्षेप खाते वे किमों भा नाम से जाने जाने हों और कोई अन्य खाते जो खण्ड (क) के अन्तर्गत नहीं आते हैं जिनके अन्तर्गत इस स्कीम के अंतर्गत देय सीमा तक ब्याज भी है। अन्तरिती बैंक विहित तारीख को सम्बन्धित धारक/कों के नाम में एक तत्काल और वेना हो खाता खोलेंगे जिनमें विहित तारीख को इस स्कीम के प्रयोजनों के लिए पैरा (4) में निर्दिष्ट यथा मूल्यांकित आस्तियों में से प्रत्येक खाते के संबंध में उपलब्ध आनुपातिक शेयर मूल्य के रूप में जमा करेगा और इस प्रकार मूल्यांकित उक्त आस्तियों में से वे अग्रिम जो आमानी से वसूली योग्य नहीं माने गए हैं, या श्रुत है या जिनकी वसूली संकास्य है, कोई अन्य आस्तिधार या आस्ति के भाग जो विहित तारीख को मूल्यांकित नहीं हैं और श्रुत रकम जो ऊपर खण्ड (क) में वर्णित संदाय या उपबन्धों के लिए अर्पित हैं, अपवर्जित किए जाएंगे और इस प्रकार मूल्यांकित उक्त आस्तियों में अन्तरक बैंक को जारी किए गए तारीख 27 अप्रैल, 1985 के अधिनियम आदेश के पैरा 2 के खण्ड (क) (1) के आधार पर किए गए संदायों का संकलित रकम जोड़ेगा:

परन्तु 27 अप्रैल, 1985 को कारबार की समाप्ति को या उसके पश्चात् और विहित तारीख के पूर्व किसी निक्षेप खाते से किए गए किसी संशय की संगणना इस उपा पैरा के अधीन जमा की जाने वाली रकम के मद्दे की जाएगी और तदनुसार जमा की जाने वाली रकम अनुपातिक शेयर होंगी जिनमें ऐसे संदाय की रकम कम कर दी जाएगी, परन्तु यह और कि जहाँ अन्तरिती बैंक को किसी विशेष खाते में की गई प्रतिभूतियों के सही होने के बारे में कोई युक्तियुक्त संदेय है तो वह रिजर्व बैंक के अनुमोदन से ऊपर खण्ड (ग) के आधार पर उन लेखों में किए जाने वाले जमा धनराशि को प्रतिधारित कर सकेगा जब तक कि अन्तरिती बैंक ऐसे खाते में गहरी श्रुति अभिविनिश्चित नहीं कर लेता है।

स्पष्टीकरण:

"आनुपातिक मद से, जहाँ तक यह इस पैरा में आता है ऐसी संबंधित रकमों के अनुपात में अभिप्रेत है जो 27 अप्रैल, 1985 को कारबार की समाप्ति पर बकाया देय हैं (विहित तारीख के ठीक पूर्ववर्ती तारीख तक देय ब्याज सहित) और जहाँ तक यह इस स्कीम में अन्यत्र आता है, से ऐसी संबंधित रकमों के अनुपात में अभिप्रेत है जो संशय या विवरण के समय बकाया देय हैं।"

(ग) ऊपर खण्ड (ख) में विनिर्दिष्ट जमा धनराशि दिए जाने के पश्चात् अन्तरिती बैंक संभवतः कम से कम विलम्ब से किन्तु विहित तारीख से तीन मास तक निक्षेप बीमा और प्रत्यय गारंटी निगम अधिनियम, 1961 के अधीन स्थापित निक्षेप बीमा और प्रत्यय गारंटी निगम को (जिस इकाई इसके पश्चात् निगम कहा गया है) एक सूची देगा, जिसमें सभी प्रकार के उस अधिनियम की धारा 18 की उपधारा (1) की अपेक्षाओं का अनुपालन किया गया है, और तत्पश्चात् जब भी उस अधिनियम की धारा 18 की उपधारा (2) में निर्दिष्ट रकम निगम से

प्राप्त हो, अन्तरिती बैंक उस तारीख या तारीखों से जिसकी रकम प्राप्त होनी है, सात दिन के अन्दर उस खाते में देय धनराशि के बित्तराज तक, उस अधिनियम की धारा 18 की उपधारा (2) के अनुसार उपर खण्ड (ख) में निर्दिष्ट प्रत्येक खाते में जमा करेगा।

परन्तु :—

- (क) यदि खण्ड (ख) में निर्दिष्ट कोई खाता बन्द कर दिया गया है या वह ऐसे समय पर जब उस खाते में जमा के लिए रकम निगम से प्राप्त होती है, परिवर्तित हो गया है तो उक्त रकम के हकदार व्यक्ति का संदाय अन्तरिती बैंक द्वारा संदाय रूप में किया जाएगा।
- (ख) यदि खण्ड (ख) में निर्दिष्ट किसी रकम के हकदार व्यक्ति का पता नहीं लगाया जा सकता है या उसका आसानी से पता नहीं बन पा रहा है तो ऐसे व्यक्ति को देय रकम के लिए उपबन्ध स्वयं निगम बहियों में किया जाएगा और उसका पृथक् रूप से लेखा दिया जाएगा तथा अन्तरिती बैंकों की किसी रकम का संदाय निगम के लिए आवश्यक नहीं होगा जब तक कि रकम का हकदार व्यक्ति मिल नहीं जाता है या उसका पता नहीं चल जाता है और निगम ने अन्तरिती बैंक के माध्यम से व्यक्ति की बाबत संदाय करने का विनिश्चय नहीं कर लिया है।
- (ग) विहित तारीख की अन्तरिती बैंक की समाप्तन पूजा की संपूर्ण रकम और आरक्षितों को बूझत और शंकास्पद ऋण के लिए उपबन्ध के रूप में माना जाएगा और अन्तरिती बैंक की अन्य अस्तित्वों में अवधारण और अन्तरिती बैंक के सदस्यों के अधिकार अन्तरिती बैंक के संघ में ऐसे नीचे पैरा (6) में उपबोधित है।

6. निम्नलिखित की बाबत :—

- (क) पूर्ववर्ती पैरा के खण्ड (ख) में वर्णित प्रत्येक लेख की बाबत उक्त खण्ड और खण्ड (ग) के साधारण पर किसी लेख, यदि कोई है, में जमा न किया गया प्रतिशेष ; और
- (ख) अन्तरिती बैंक में प्रत्येक शेयर की बाबत जिसकी रकम की विहित तारीख से ठीक पूर्व प्रत्येक शेयर धारक के द्वारा या उसकी ओर से शेयर पूजा के मद्दे समाप्तन रूप में माना गया था या नीचे (1) के अनुसार अन्तरिती बैंक द्वारा की गई मांग के मद्दे रकम संदर्भ की गई थी, संग्रहण रकम के रूप में माना जाएगा और उसे अन्तरिती बैंक की बहियों में उस प्रकार दर्ज किया जाएगा और लेखा के विरुद्ध संदाय निम्नलिखित रीति में किया जाएगा, अर्थात् :—

- (1) (क) अन्तरिती बैंक प्रथमतः ऐसे व्यक्ति से जो विहित तारीख को अन्तरिती बैंक में आस्थगित शेयर धारक के रूप में रजिस्ट्रीकृत था (या जो इस प्रकार रजिस्ट्रीकृत किए जाने का हकदार होता) ऐसी तारीख या तारीखों से तीन मास के अन्दर जो विनिर्दिष्ट की जाए या जाएं, ऐसे शेयर या शेयरों और वकाफा मांगों, यदि कोई हों, की बाबत उसके द्वारा असंदर्भ रह रही अनाहूत रकम का संदाय करने की प्रपेक्षा कर सकेगा और तत्पश्चात् यदि यह आवश्यक पाया जाता है तो वह ऐसे प्रत्येक व्यक्ति में जो विहित तारीख को, अन्तरिती बैंक के साधारण शेयर धारक के रूप में रजिस्ट्रीकृत था (या जो इस प्रकार रजिस्ट्रीकृत किए जाने का हकदार होता) ऐसी तारीख या तारीख से जो विनिर्दिष्ट की जाए, तीन मास के अन्दर ऐसे शेयर या शेयरों या वकाफा मांगों, यदि कोई हों, की बाबत उसके द्वारा असंदर्भ रह रही अनाहूत रकम का संदाय करने की प्रपेक्षा कर सकेगा।

(ख) अन्तरिती बैंक प्रत्येक मामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, व्यक्तिगत की कालावधि के लिए छः प्रतिशत वार्षिक व्याज सहित खण्ड (क) के अधीन देय रकम के संदाय की मांग और उसे प्रवर्तित करने के लिए सभी उपलब्ध कदम उठाएगा।

- (2) अन्तरिती बैंक अधिमो, ऋण या मितिकाटा किए गए भुगतान, ऋणियों, वही ऋणों और विविध ऋणों तथा अन्य आस्तियों की बाबत जो, "ऐसे अधिमो के रूप में जो आसानी से बसूली योग्य नहीं है और या बसूली के लिए बूझत या शंकास्पद" है, के हम में वर्गीकृत किया गया है, या

जो ऊपर पैरा 4 के आधार पर विहित तारीख के पश्चात् पूर्णतः या भागतः बसूली योग्य है या हो सकते हैं, के संबंध में मामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, संदाय की मांग और उसे प्रवर्तित कराने के लिए सभी उपलब्ध कार्यवाही करेगा परन्तु यह और कि किसी ऋण या आस्ति की रकम 50,000 रुपए से अधिक है, तो अन्तरिती बैंक भारतीय रिजर्व बैंक के अनुमोदन के बिना :

(क) ऋणी या किसी अन्य व्यक्ति के साथ कोई समझौता या ठहाराव नहीं करेगा या किसी ऐसे ऋण या आस्ति को बट्टे खाते नहीं खोलेगा।

(ख) उसे अन्तरिती किसी प्रतिभूतियों का या उसके द्वारा जो गई किसी आस्ति का विक्रय या अन्यथा व्ययन नहीं करेगा।

- (3) इसके अतिरिक्त, अन्तरिती बैंक, बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 की धारा 45 ज के साथ और कंपनी अधिनियम, 1956 की धारा 543 के साथ भी पठित बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 की धारा 45 ठ के अधीन अन्तरिती बैंक के किसी संप्रवर्तक, निदेशक, प्रबंधक या अन्य अधिकारी के विरुद्ध उच्च न्यायालय द्वारा नुकसानी के रूप में अधिनिर्णीत की गई रकम, यदि कोई हो, की मांग करने और उनका संदाय करवाने के लिए प्रत्येक मामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए सभी उपलब्ध कार्यवाहियां करेगा ;

- (4) अन्तरिती बैंक, 'उपर्युक्त खण्ड (i), (ii) और (iii) में उल्लिखित मर्दों के कारण अपने द्वारा की गई वसूलियों में से किसी समाश्रित दायित्व की बाबत, और रिजर्व बैंक के पूर्व अनुमोदन से किसी ऐसे दायित्व, चाहे वह समाश्रित हो या अस्थायिक, की बाबत, जिसे उपर्युक्त पैरा (4) के निबंधनों के अनुसार निर्धारित नहीं किया गया था और जो विहित तारीख को या उसके पश्चात् उद्भूत हुआ है या जिसका पता चला है, संदाय कर सकेगा या उस सीमा तक, जो पैरा 5 के अधीन उसके लिए किया गया उपबन्ध अपर्याप्त हो, उपलब्ध कर सकेगा ;

- (5) अन्तरिती बैंक, उपर्युक्त खंड (i), (ii) और (iii) में उल्लिखित मर्दों के कण अपने द्वारा की गई वसूलियों में से, उन प्रयोजन के लिए उपगत व्यय की और भारतीय रिजर्व बैंक के अनुमोदन से ऐसे अन्य व्ययों की, जो उचित समझा जाए, उसमें से कटौती करने और उपर्युक्त खंड (iv) के निबंधनों के अनुसार उसमें से रकम विनियोजित करने के पश्चात् या ऐसे प्रतिशेष, यदि कोई हो, में से, जो ऐसे दायित्व की सीमा प्रमाण कर से अभिविधित की जाने के पश्चात् इस स्कीम के प्रयोजनों के लिए संचालित समाश्रित दायित्वों की बाबत उपबन्ध में से उपलब्ध हो।

- (क) निषेध बीमा और प्रत्यय गारंटी निगम अधिनियम, 1961 की धारा 18 की उपधारा (2) के अधीन अन्तरिती बैंक द्वारा निगम से प्राप्त रकम और निगम द्वारा उपबोधित रकम यदि कोई हो, का संदाय करेगा, और

(ख) ऐसे निक्षेप-अर्थात् के मामले में, जिनकी बाबत अन्तरिती बैंक द्वारा कोई रकम निगम से प्राप्त नहीं की गई है, संज्ञक खाते की बाबत शोध्य रकमों का। और ऐसे निक्षेप-अर्थात् के मामले में, जिनकी बाबत अन्तरिती बैंक द्वारा कोई रकम निगम से प्राप्त की गई है या निगम द्वारा उपवर्धित हो गई है, निगम द्वारा किए गए या उपवर्धित संदाय की बाबत निगम का उत्तर खाते से शोध्य रकमों को उपर्युक्त उपखंड (क) के उद्देश्यों के अनुसार पहले संदत्त किए जाने के पश्चात् उनके संग्रहण खाते में उन्हें शोध्य प्रतिशेष, यदि कोई हो, का संचाय करेगा।

परन्तु यह कि निगम को शोध्य रकम, यदि ऐसा करना आवश्यक हो तो अन्तरिती बैंक की बहियों में उपवर्धित की जाएगी तथा विनियम 22 के खंड (ख) में विनिर्दिष्ट रीति से निगम को संदत्त की जाएगी।

परन्तु यह और कि अन्तरिती बैंक, उपर्युक्त खंड (ख) में विनिर्दिष्ट संदाय उस रण में करेगा—

- (i) यदि पैरा (5) के खंड (ख) में उल्लिखित तत्पमान या तत्पदा खाते को बंद नहीं किया गया है या वह उन खाते में प्रत्यक्ष द्वारा भुगतान के लिए परिपक्व नहीं हुआ है; और
- (ii) यदि उन खाते को बंद कर दिया गया है या वह नरुद्ध भुगतान के लिए परिपक्व हो गया है;
- (vi) उपर्युक्त खंड (v) के उपखंड (क) के निबंधनों के अनुसार निगम को शोध्य रकमों और उन खंड के उपखंड (ख) के निबंधनों के अनुसार निक्षेपकर्ताओं के संग्रहण खाते में शोध्य रकमों की श्रेणी में आपस में समान होंगे, और यदि उनका संदाय पूर्णतः नहीं किया जा सकता तो उनमें समान अनुपात में कमी होगी;
- (vii) इस पैरा के खंड (v) में विनिर्दिष्ट संदाय के लिए जाने या पूर्णतः उपवर्धित किए जाने के पश्चात्, अन्तरिती बैंक, खंड (v) में विनिर्दिष्ट रकमों के उस प्रतिशेष जो उनके पास उपलब्ध हो, में से, अन्तरक बैंक के भूतपूर्व शेषरधारकों के खाते में शोध्य रकम, यदि कोई हो, हेतु ऐसी राशि से और उस सीमा तक, जो नीचे विनिर्दिष्ट है, आनुपातिक संदाय करेगा।
- (क) प्रथमतः सब खाते के लिए पूर्णतः संदाय किए जाने तक अन्तरक बैंक के भूतपूर्व अधिमान शेषरधारकों के खाते में शोध्य रकम, यदि कोई हो;
- (ख) द्वितीयतः सब खाते के लिए पूर्णतः संदाय किए जाने तक अन्तरक बैंक के भूतपूर्व सामान्य शेषरधारकों के खाते में शोध्य रकम, यदि कोई हो, और उसके पश्चात्
- (ग) तृतीयतः सब खाते के लिए पूर्णतः संदाय किए जाने तक अन्तरक बैंक के भूतपूर्व आस्थगित शेषरधारकों के खाते में शोध्य रकम, यदि कोई हो;
- (घ) उपर्युक्त उपखंड (क), (ख) और (ग) में उल्लिखित सब रकम को पूर्णतः संदत्त करने के पश्चात् अन्तरिती बैंक के पास बाकी बचे अधिशेष का अन्तरक बैंक के भूतपूर्व सामान्य शेषरधारकों के बीच आनुपातिक वितरण किया जाएगा।

परन्तु यह कि यदि कोई प्रश्न उत्पन्न है कि उपर्युक्त किसी उपखंड में उल्लिखित खाते के लिए कोई रकम शोध्य है या नहीं तो उसे भारतीय रिजर्व बैंक को निर्दिष्ट किया जाएगा जिसका उस पर विनिश्चय अंतिम होगा।

(viii) इस पैरा में निर्दिष्ट संग्रहण खाते में शोध्य रकम के बारे में केवल अन्तरिती बैंक का दायित्व उस सीमा तक समझा जाएगा जो इस स्कीम के उपवर्धित है;

(ix) विहित तारीख या ऐसी पूर्वतर अवधि से, जो केन्द्रीय सरकार भारतीय रिजर्व बैंक से परामर्श करने के पश्चात् इस प्रयोजन के लिए निर्दिष्ट करे, बावजूद वर्ष के प्रवर्तमान पर इस पैरा के खंड (ii) में निर्दिष्ट किसी ऐसी मर का, जो उस तारीख तक बसुन नहीं की जा सकी हो मूल्यकन अन्तरिती बैंक द्वारा भारतीय रिजर्व बैंक के परामर्श से किया जाएगा और अन्तरिती बैंक, उस मूल्यकन को ध्यान में रखते हुए, अधिधारित कोई रकम, इस पैरा के खंड (iv) में निर्दिष्ट दायित्वों की पूर्ति के लिए आवश्यक किसी ऐसी राशि की जो उपर्युक्त खंड (v), (vi) और (vii) में उपवर्धित कम और नीचे से उस तारीख तक चुकायी जाने से रह गई हो पहले उसमें से कटौती करके वितरित करेगा;

(x) अन्तरिती बैंक, पूर्ववर्ती खंड (i), (ii) और (iii) में उल्लिखित मदों के कारण, बसुन किए गए ऐसे धन को, जिनकी तुरन्त सदाय के लिए उसके द्वारा अधिधारित जाने की संभावना नहीं है, अपने पास या किसी अन्य बैंक या बैंकों के पास व्याज वाले निक्षेपों में, ऐसी रीति और ऐसी अवधि के लिए, जो मामले के तथ्यों और परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए उपयुक्त हो या जैसा भारतीय रिजर्व बैंक निदेश दे, विनिर्दिष्ट करेगा। प्रोदभूत व्याज को खंड (iv) (v), (vi) और (vii) में निर्दिष्ट दायित्वों की पूर्ति के लिए उन्हें उपवर्धित रीति से उपयोजित किया जाएगा।

7 किसी अधिधारित या विवक्षित संविदा में किसी प्रतिकूल धान के हान हुए भी पैरा (5) के निबंधनों के अनुसार अन्तरिती बैंक के पास खोले गए नए धान की बाबत व्याज का संदाय किया जाएगा और उसे केवल उन या धानों के उत्तरवर्ती पैराओं के उपवर्धनों के अनुसार ऐसी दरों पर जो अन्तरिती बैंक अनुज्ञात करे, जमा किया जाएगा।

8. कोई भी निक्षेपकर्ता या अन्तरक बैंक का अन्य लेनदार, उसके प्रति अन्तरक बैंक के हितों शक्ति की व सब अन्तरक बैंक या अन्तरिती बैंक से इस स्कीम द्वारा विहित सीमा के बिना, कोई मांग करने का हकदार नहीं होगा।

9 केन्द्रीय सरकार, भारतीय रिजर्व बैंक या अन्तरिती या अन्तरक बैंक के बिना किसी ऐसी बात के लिए कोई वाद या अन्य विधिक कार्य-वाहियां नहीं होगी, जो इस स्कीम के अनुकरण में सद्भावपूर्वक की गई है या की जाने के लिए आयोजित है।

10 उत्तरवर्ती पैरा में विनिर्दिष्ट अनुपूर्वी विनिर्दिष्ट कर्मचारियों से विभिन्न अन्तरक बैंक के सभी कार्यवाही के मजबूत होने और यह समझा जाएगा कि उक्त अन्तरिती बैंक द्वारा उसी प्राथमिक और सेवा के उन्हीं निबंधनों और शर्तों पर नियुक्त किया गया है जो 27 अप्रैल, 1985 को कारबार बंद होने के ठीक पहले ऐसे कर्मचारियों को लागू थीं।

11 यह कि अन्तरक बैंक के ऐसे कर्मचारी जिन्होंने अन्तरक बैंक या अन्तरिती बैंक को, उस तारीख के, जिसका यह स्कीम केन्द्रीय सरकार द्वारा मजूर किया गया है, उक्त आयामों एक मास के अवधान के पूर्व किसी भी समय अन्तरिती बैंक के कर्मचारी न होने के अर्थ में आशय के बारे में लिखित सूचना द्वारा सूचित किया है, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 के उपबंधों के अधीन ऐम प्रतिकर, यदि कोई हों और ऐम पेशन, उपदान, भविष्य निधि और सेवानिवृत्ति फायदे के संशय के लिए हकदार होंगे, जो 27 अप्रैल, 1985 को कारबार के बंद होने के ठीक पहले अन्तरक बैंक के प्राधिकरण नियमों के अधीन सामान्य तौर पर अनुज्ञेय हों।

परन्तु यह भी कि अन्तरक बैंक के ऐसे कर्मचारियों को बाधित, जिनके बारे में यह समझा जाता है कि उन्हें अन्तरिक बैंक के कर्मचारियों के रूप में नियुक्त किया गया है, अन्तरिक बैंक के बारे में भी यह समझा जाएगा कि उसने अन्तरिक बैंक की सेवा में रहने के दौरान उनकी छुट्टी की दशा में इस आधार पर छुट्टी प्रतिकर के संदाय का दायित्व लिया है कि उनकी सेवाविरंतर बनी रहती है और अन्तरिक बैंक में उनके स्थापनाकरण से विछिन्न नहीं हुई है।

11. इस स्कीम से उपावद्ध अनुसूची में विनिर्दिष्ट व्यक्ति, विहित तारीख को अन्तरक बैंक के कर्मचारियों नहीं रह जायेंगे और तत्पश्चात् प्रयुक्त किसी विधि या किसी कारण या संविधान में किसी बात के होते हुए भी, इस प्रकार विनिर्दिष्ट व्यक्ति, केवल ऐमपगत, उपदान, भविष्य निधि और अन्य सेवानिवृत्ति फायदे के हकदार होंगे, जो 27 अप्रैल, 1985 को कर-बार के बंद होने के ठीक पहले अन्तरक बैंक के प्राधिकरण नियमों के अन्तर्गत उन्हें सामान्य दौर पर अनुसूच्य हों।

परन्तु यह कि नियोजन की दृष्टि के लिए प्रतिकर, यदि कोई हो, जहां तक उसका संबंध सेवा की किसी संविधान के अतिरिक्त भाग से है, केवल वही होगा जो रिजर्व बैंक द्वारा अवधारित किया जाए (इस बाबत अपना अवधारण अंतिम और बाध्यकारी होगा)।

परन्तु यह और कि इसमें कोई भी बात से यह नहीं समझा जाएगा कि यह अन्तरिक बैंक को कितने ऐसे व्यक्ति के, जिसका नाम इस स्कीम से उपावद्ध अनुसूची में विनिर्दिष्ट किया गया है, ऐसी दृष्टि से और और ऐम निबंधनों और शर्तों पर, जो अन्तरिक बैंक उचित समझे, पुनर्नियोजन करने से निवारित करती है।

12. अन्तरिक बैंक, उस तारीख से, जिसका इस स्कीम को मंजूर किया जाता है, तीन वर्ष से अधिक अवधि के अवधान पर, अन्तरक बैंक के कर्मचारियों को वही पारिश्रमिक और सेवा के वही निबंधन और अन्य संदाय या मंजूर करेगा, जो अन्तरिक बैंक के तत्पश्चात् बैंक या प्रत्यक्ष के कर्मचारियों को, अन्तरिक बैंक के ऐसे अन्य कर्मचारियों के समान या समतुल्य अन्तरक बैंक के उक्त कर्मचारियों के पास पहुंचाए और अनुभव के अधीन रहने हुए, लागू हों।

परन्तु यह कि यदि कोई शंका या मतभेद उत्पन्न होता है कि उक्त कर्मचारियों में से किसी की अर्हताएं या अनुभव अन्तरिक बैंक के तत्पश्चात् बैंक या प्रत्यक्ष के अन्य कर्मचारियों की अर्हताएं और अनुभव के समान या समतुल्य है या नहीं या वह अन्तरिक बैंक के वेतनाभ्यास कर्मचारियों का वेतन नियत करने के लिए प्रस्तावित जाने वाले विचारों का प्रतिकार, के संबंध में है, तो शंका या मतभेद को भारतीय रिजर्व बैंक को निर्दिष्ट किया जाएगा जिसका उस पर विनिश्चय अंतिम होगा।

13. यथास्थिति, अन्तरक बैंक या अन्तरिक बैंक के कर्मचारियों के लिए गठित किसी भविष्य निधि और/या उपदान निधि के न्यासी या प्रशासक, विहित तारीख का या उसके पश्चात् यथासंभव गोप्य, अन्तरिक बैंक के लिए गठित कर्मचारी भविष्य निधि और/या उपदान निधि के न्यासी को, या अन्यथा जैसा अन्तरिक बैंक निर्देश दे, अन्तरक बैंक के कर्मचारियों के फायदे के लिए न्याय में धारित सब घन और विनिधान अन्तरिक कर देंगे।

परन्तु यह कि ऐसे पञ्चानुवर्ती न्यासी, विनिधानों के मूल्य में किसी कमी के लिए, या विहित तारीख के पहले किए गए किसी कार्य, उपाय या व्ययक्रम की बाधक कार्य नहीं होंगे।

14. अन्तरिक बैंक, ऐसे विनियम और जानकारी भारतीय रिजर्व बैंक को भेजेगा, जो भारतीय रिजर्व बैंक इस स्कीम के कार्यान्वित करने के संबंध में समय-समय पर अपेक्षा करे।

15. अन्तरिक बैंक, अन्तरक बैंक के कार्यकाल का निरूपण, ऐसे प्राप्ति में और ऐसे कालिक अंतरालों पर, जो भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा

निमित्त विनिर्दिष्ट करे, अन्तरक बैंक के नियन्त्रणों का भेजेगा। ऐसे विनियमों का भेजा जाना तब रोक जाएगा जब रिजर्व बैंक ऐसा निर्देश दे।

(16) किसी भी सूचना या प्रत्यक्ष सूचना के रूप में, जिसकी अन्तरिक बैंक द्वारा दी जाने की अपेक्षा की जाती है, उस दशा में यह समझा जाएगा कि उसे सम्यक् रूप से दे दिया गया है, यदि अन्तरक बैंक की पुस्तकों में रजिस्ट्रीकरण पते पर, जब तक कि कोई नया पता अन्तरिक बैंक को पुस्तकों में रजिस्ट्रीकरण न हो, प्रेषित की संबंधित किया गया है और उसे पूर्व-सदस्य सामान्य डाक से भेज दिया गया है, और ऐसी सूचना उसे डाक से भेज जाने के पश्चात् अज्ञात लोक घटे के अवधान पर तामील की गयी समझा जाएगी। इसके अतिरिक्त, किसी ऐसी सूचना या संसूचना को, जो तारीखिक दिन को हो, एक या अधिक दैनिक समाचार पत्रों में, जिसका परिचालन ऐसे स्थानों पर हो जहां बैंक अपने कारबार का व्यवहार कर रहा था, विज्ञापित किया जाएगा।

(17) यदि इस स्कीम के किसी उपबंध का निर्वहन करने समय कोई शंका उत्पन्न होती है तो मामले को भारतीय रिजर्व बैंक को निर्दिष्ट किया जाएगा और उसकी राय निष्ठावक होगी और अन्तरिक बैंक और अन्तरक बैंक दोनों पर तथा इस प्रत्येक बैंक के सभी सदस्यों, निदेशकताओं और अन्य निदेशकों तथा कर्मचारियों पर भी और किसी ऐसे अन्य व्यक्ति पर, जिसका इस बैंकों में से किसी के वर्ध में कोई अधिकार या दायित्व है, बाध्यकारी होगी।

(18) यदि इस स्कीम के उपबंधों को प्रभावी करने में कोई कठिनाई उत्पन्न होती है तो केन्द्रीय सरकार, अन्तरक और अन्तरिक बैंकों को या उनमें से किसी को, ऐसे निर्देश, जो इस स्कीम से अंगत न हो, जारी कर सकेगी, जो केन्द्रीय सरकार को, भारतीय रिजर्व बैंक से परामर्श करने के पश्चात् कठिनाई दूर करने के प्रयोजन के लिए आवश्यक या उपयुक्त प्रतीत हो।

[नं. 17/11/85-बी. ओ. III (ii)]

अनुसूची :

बैंककारी विनियमन अधिनियम 1949 (1949 का 10) की धारा 45 की उपधारा (7) के अंतर्गत केन्द्रीय सरकार द्वारा स्वीकृत बैंक ऑफ इंडिया कोचिन लिमिटेड के बिलय की योजना के साथ मेलन और उसके अंग के रूप में अनुसूची।

कर्मचारी का नाम	अन्तरक बैंक में संज्ञा
1. श्री पी. आर्. जान	अध्यक्ष
2. श्री जोसेफ फेन	सतर्कता अधिकारी
3. श्रीमती मेरीकुट्टि तरिजन	कार्यक्रम समन्वयकर्ता
4. श्री सी. डी. एटनी	महाप्रबंधक
5. श्री जार्ज वलियम (निलंबनाधीन)	भूतपूर्व कामिक प्रबंधक
6. श्री के. पी. पाल (निलंबनाधीन)	अधिकारी
7. श्री एम. सी. जोस (निलंबनाधीन)	
8. श्री टी. टी. जोस	शाखा अधिकारी
9. श्री सी. जे. वारेंस	चौनरशाखा
10. श्री आर. पार्थसारथी	अधिकारी, कोयंबटूर
11. श्री डी. जे. मण्डल	अधिकारी, पंढरपुर शाखा
12. श्री पी. एन. कामिस	अधिकारी, कट्टूर शाखा

13. श्री एम. जे. थाम्स	प्रबंधक, तिरुचो शाखा
14. श्री टी. जे. नैनन	प्रबंधक, चंगनाचेरी शाखा
15. श्री एम. टी. एंटनी	अधिकारी, पुस्तूबोझावाबूर
16. श्री के. एम. चेरियन	शाखा प्रबंधक, पेरम्बाबूर
17. श्री जौनी पाल	अधिकारी एनाकुलम, ब्राडवे
18. श्री एम. पी. सेवस्तिथान	शाखा प्रबंधक, मट्टाचेरी
19. श्री के. टी. थाम्स	शाखा निरीक्षक, प्रधान कार्यालय
20. श्री ए. शंकर परमेश्वरन	अधिकारी, प्रधान कार्यालय
21. श्री यू. पी. वर्गिस	संयुक्त प्रबंधक

S.O. 622(E).—Whereas, on an application made by the Reserve Bank of India under sub-section (1) of section 45 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949) the Central Government has made, under sub-section (2) of the said section 45 an order of moratorium in respect of the Bank of Cochin Limited, Cochin under sub-section (2) of the said section.

And whereas the Reserve Bank of India in exercise of the powers conferred by sub-section (4) of section 45 of the said Act has prepared a scheme for the amalgamation of the Bank of Cochin Ltd., Cochin with State Bank of India.

And whereas the Reserve Bank after having sent the said scheme in draft to the banks concerned in accordance with the provisions of sub-section (6) of the said section and after having considered the suggestions and objections received in regard to the said scheme has modified that scheme and forwarded it to the Central Government for sanction.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (7) of section 45 of the said Act, the Central Government hereby sanctions the scheme on and subject to the terms and conditions hereinafter mentioned.

(1) The Bank of Cochin Ltd., Cochin, shall be the transferor bank and the State Bank of India shall be the transferee bank.

(2) As from the date which the Central Government may specify for this purpose under sub-section (7) of section 45 of the said Act (hereinafter referred to as the prescribed date) all rights, powers, claims, demands, interests, authorities, privileges, benefits, assets and properties of the transferor bank, movable and immovable, including premises subject to all incidents of tenure and to the rents and other sums of money and covenants reserved by or contained in the leases or agreements under which they are held all office furniture, loose equipment, plant, apparatus and appliances, books, papers, stocks of stationery, other stocks and stores, all investments in stocks, share and securities, all bills receivable in hand and in transit, all cash in hand and on current or deposit account (including money at call or short notice) with banks, bullion, all book debts mortgage debts and other debts with the benefit of securities, or any guarantee therefore, all other, if any, property rights and assets benefit of all guarantees in connection with the business of the transferor bank shall, subject to the other provisions of this scheme, stand

transferred to, and become the properties and assets of, the transferee bank; and as from the prescribed date all the liabilities, duties and obligations of the transferor bank shall be and shall become the liabilities, duties and obligations of the transferee bank to the extent and in the manner provided hereinafter.

Without prejudice to the generality of the foregoing provisions, all contracts, deeds, bonds, agreements, powers of attorney, grants of legal representation and other instruments of whatever nature subsisting or having effect immediately before the prescribed date shall be effective to the extent and in the manner hereinafter provided against or in favour of the transferee bank and may be acted upon as if instead of the transferor bank the transferee bank had been a party thereto or as if they had been issued in favour of the transferee bank.

If on the prescribed date any suit, appeal or other legal proceedings of whatever nature by or against the transferor bank is pending, the same shall not abate, or be discontinued or be in any way prejudicially affected, but shall subject to the other provisions of this scheme, be prosecuted and enforced by or against the transferee bank.

If according to the laws of any country outside India the provisions of this scheme, by themselves, are not effective to transfer or vest any asset or liability situated in that country which forms part of the undertaking of the transferor bank to or in the transferee bank, the affairs of the transferor bank in relation to such assets or liability shall, on the prescribed date, stand entrusted to the chief executive officer for the time being of the transferee bank and the chief executive officer may exercise all powers and do all such acts and things as would have been exercised or done by the transferor bank for the purpose of effectively winding up its affairs. The chief executive officer shall take all such steps as may be required by the laws of any such country outside India for the purpose of effecting such transfer or vesting and in connection therewith the chief executive officer may, either himself or through any person authorised by him in this behalf, realise any assets or discharge any liability of the transferor bank and transfer the net proceeds thereof to the transferee bank.

(3) The books of the transferor bank shall be closed and balanced and balance sheets prepared in the first instance as at the close of business on the 27th April, 1985 and thereafter as at the close of business on the date immediately preceding the prescribed date and the balance sheets shall be got audited and certified by the chartered accountant or a firm of chartered accountants approved or nominated by the Reserve Bank of India for the purpose.

A copy of each of the balance sheets of the transferor bank prepared in accordance with the provisions of the foregoing paragraph shall be filed by the transferor bank with the Registrar of Companies as soon as possible after it has been received and thereafter the transferor bank shall not be required to prepare balance sheets or profit and loss accounts, or to lay the same before its members or file copies thereof

with the Registrar of Companies or to hold any annual general meeting for the purpose of considering the balance sheet and accounts, or for any other purpose or to comply with the provisions of section 159 of the Companies Act, 1956, and it shall not thereafter be necessary for the Board of Directors of the transferor bank to meet as required by section 285 of that Act.

(4) I. The transferee bank shall, in consultation with the transferor bank, value the property and assets and reckon the liabilities of the transferor bank in accordance with the following provision, namely:—

(a) Investments other than Government securities shall be valued at the market rates prevailing on the day immediately preceding the prescribed date.

(b) (i) Government securities shall be value as on the day immediately preceding the prescribed date in accordance with the principles laid down in the notification issued by Reserve Bank of India for the purpose of section 24 of the Banking Regulation Act, 1949.

(ii) The securities of the Central Government such as Post Office Certificates, Treasury Savings Deposit Certificates and any other securities or certificates issued under the small savings scheme of the Central Government shall be valued at their face value or the encashable value as on the said date, whichever is higher.

(iii) Where the market value of any Government security such as the Zamindari Abolition Bonds or other similar security in respect of which the principal is payable in instalments is not ascertainable or is, for any reason, not considered as reflecting the fair value thereof or as otherwise appropriate, the security shall be valued at such an amount as is considered reasonable having regard to the instalments of principal and interest remaining to be paid, the period during which such instalments are payable, the yield of any security issued by the Government to which the security pertains and having the same or approximately the same maturity, and other relevant factors.

(c) Where the market value of any security, share, debenture, bond or other investment is not considered reasonable by reason of its having been affected by abnormal factors, the investment may be valued on the basis of its average market value over any reasonable period.

(d) Where the market value of any security, share, debenture, bond or other investment is not ascertainable, only such value, if any, shall be taken into account as is considered reasonable, having regard to the financial position of the issuing concern, the dividends paid by it during the preceding five years and other relevant factors.

(e) Premises and all other immovable properties and any assets acquired in satisfaction of claims shall be valued at their market value.

(f) Furniture and fixtures, stationery in stock and other assets, if any, shall be valued at the written down value as per books or the realisable value as may be considered reasonable.

(g) Advances including bills purchased and discounted, book debts and sundry assets, will be scrutinised by the transferee bank and the securities, including guarantees held as cover therefor examined and verified by the transferee bank. Thereafter the advances, including portions thereof, will be classified into two categories, namely, "Advances considered good and readily realisable" and "Advance considered not readily realisable and/or bad or doubtful of recovery".

II. Liabilities for purposes of this scheme shall include all contingent liabilities which the transferee bank may reasonably be expected or required to meet out of its own resources on or after the prescribed date.

III. Where the valuation of any asset cannot be determined on the prescribed date, it may, with the approval of the Reserve Bank of India be treated partly or wholly as an asset realisable at a later date.

In the event of any disagreement between the transferee bank and the transferor bank as regards the valuation of any asset and/or the classification of any advance and/or the determination of any liability, the matter shall be referred to the Reserve Bank of India, whose opinion shall be final, provided that until such an opinion is received, the valuation of the item or portion thereof by the transferee bank shall provisionally be adopted for the purpose of this scheme.

It shall be competent for the Reserve Bank in the event of its becoming necessary to do so, to obtain such technical advice as it may consider to be appropriate in connection with the valuation of any such item of asset or determination of any such item of liability, and the cost of obtaining such advice shall be payable in full out of the assets of the transferor bank.

The valuation of the assets and the determination of the liabilities in accordance with the foregoing provisions shall be binding on both the banks and the members and creditors thereof.

(5) In consideration of the transfer of the property and the assets of the transferor bank to the transferee bank the transferee bank shall discharge the liabilities of the transferor bank to the extent mentioned in this and the following clauses, namely:—

(a) Any sums deposited by any employee of the transferor bank with that bank as staff security deposits together with interests, if any, accrued thereon up to the prescribed date and all other outside liabilities as on the prescribed date excluding deposits shall be paid or provided for in full.

Explanation.—For the purpose of this paragraph, interest payable on a deposit up to the prescribed date shall be regarded as part of the concerned deposit.

(b) In respect of every savings bank account or current account or any other deposit

including a fixed deposit, cash certificate, monthly deposit, deposit payable at call or short notice or any other deposit by whatever name called with the transferor bank and every other account not covered by clause (a), including interest to the extent payable under this scheme, the transferee bank shall open with itself on the prescribed date a corresponding and similar account in the name of the respective holder(s) thereof crediting thereto the pro rata share available in respect of each of the accounts out of the assets referred to in paragraph (4) as valued for the purposes of this scheme on the prescribed date, after excluding from the said assets as so valued the advances considered not readily realisable or bad or doubtful of recovery, any asset or portion of an asset not valued on the prescribed date and any amount needed for the payments or provisions mentioned at clause (a) above and after adding to the said assets as so valued the aggregate amount of the payments made in terms of clause (a)(i) of paragraph 2 of the moratorium order dated the 27th April, 1985 issued to the transferor bank.

Provided that any payment made from a deposit account on, or after the close of business on 27th April 1985 and before the prescribed date, shall be reckoned towards the amount to be credited under this subparagraph and, accordingly the amount to be credited shall be the pro rata share less the amount of such payment.

Provided further that where the transferee bank entertains a reasonable doubt about the correctness of the entries made in any particular account it may with the approval of the Reserve Bank, withhold the credit to be made in that account in terms of clause (b) above till the transferee bank is able to ascertain the correct balance in such accounts.

Explanation.—The term 'pro rata' shall, in so far as it occurs in this paragraph, mean in proportion to the respective amounts remaining due as at the close of business on the 27th April 1985 (together with interest payable up to the date immediately preceding the prescribed date) and shall in so far as it occurs elsewhere in this scheme, mean 'in proportion to the respective amounts remaining due at the time of the payment or distribution'.

- (c) After the credits referred to in clause (b) above have been afforded, the transferee bank shall, with the least possible delay but in any case not later than three months from the prescribed date, furnish to the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation established under the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation Act, 1961 (hereinafter referred to as the Corporation) a list complying in all respects with the requirements of sub-

section (1) of section 18 of that Act and thereafter whenever amounts referred to in sub-section (2) of section 18 of that Act are received from the Corporation, the transferee bank shall credit each of the accounts referred to in clause (b) above, within seven days from the date or dates on which the amounts are received, to the extent of the sums due to that account in accordance with sub-section (2) of section 18 of that Act :

Provided that—

- (a) if any account referred to in clause (b) has been closed or has matured for payment at the time when any amount for credit to that account is received from the Corporation, the payments to the person entitled to the said amount shall be made by the transferee bank in cash ;
- (b) in case the person entitled to any amount referred to in clause (b) cannot be found or is not readily traceable, provision for the amount due to such person shall be made and accounted for separately on the books of the Corporation itself and it shall not be necessary for the Corporation to pay the amounts to the transferee bank unless the person entitled to the amount is found or traced and the Corporation has decided to make the payment in respect of that person through the transferee bank.
- (c) On the prescribed date, the entire amount of the paid-up capital and reserves of the transferor bank shall be treated as provision for bad and doubtful debts and depreciation in other assets of the transferor bank and the rights of the members of the transferor bank shall, in relation to the transferee bank, be as provided for in paragraph (6) below :

(6) In respect of

- (a) every account mentioned in clause (b) of the preceding paragraph, the balance in the account, if any, remaining uncredited in terms of that clause and clause (c) and
- (b) every share in the transferor bank, the amount of which was treated as paid-up towards share capital by or on behalf of each shareholder immediately before the prescribed date and/or amount paid on account of the calls made by the transferee bank in pursuance of clause (i) below ;

shall be treated as a collection amount and may be entered as such in the books of the transferee bank and payments against the account shall be made in the following manner, namely :—

- (i) (a) the transferee bank shall, in the first instance, call upon every person who on

- the prescribed date was registered as the holder of a deferred share in the transferor bank (or would have been entitled to be so registered) to pay within three months from such date or dates as may be specified, the uncalled amount remaining unpaid by him in respect of such share or shares and the calls in arrears, if any and thereafter, if it is found to be so necessary, every person who was, as on the prescribed date, registered as the holder of an ordinary share of the transferor bank (or would have been entitled to be so registered) to pay within three months from such date or dates as may be specified, the uncalled amount remaining unpaid by him in respect of such share or shares or the calls in arrears, if any;
- (b) the transferee bank shall take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce the payment of the amounts due under clause (a) together with interest at six per cent per annum for the period of the default;
 - (ii) the transferee bank shall in respect of the advances, bills purchased and discounted, books debts and sundry debts and other assets, which are classified as "Advances considered not readily realisable and/or bad or doubtful of recovery", or which are or may be realisable wholly or partly after the prescribed date in terms of paragraph (4) above, take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce payment, provided, however, that if the amount of a debt or asset exceeds Rs. 50,000, the transferee bank shall not except with the approval of the Reserve Bank of India ;
 - (a) enter into a compromise or arrangement with the debtor or any other person or write off any such debt or asset.
 - (b) sell or otherwise dispose of any securities transferred to it or any asset taken over by it.
 - (iii) the transferee bank shall in addition take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce the payment of the amounts, if any, awarded as damages by the High Court against any promoter, director, manager or other officer of the transferor bank under section 45L of the Banking Regulation Act, 1949, read with section 45H thereof and also with section 543 of the Companies Act, 1956 ;
 - (iv) the transferee bank may, out of the realisations effected by it on account of the items mentioned in clauses (i), (ii) and (iii) above, make payment or provision in respect of any contingent liability to the extent that the provision made therefor under paragraph (5) (a) proves to be inadequate, as also with the prior approval of the Reserve Bank, in respect of any liability whether contingent or absolute which was not assessed in terms of paragraph (4) above and has arisen or been discovered on or after the prescribed date
 - (v) the transferee bank shall out of the realisations effected by it on account of the items mentioned in clauses (i), (ii) and (iii) above after deducting therefrom the expenditure incurred for the purpose and, with the approval of the Reserve Bank of India, such other expenses as may be considered reasonable and the amount appropriated therefrom in terms of clause (iv) above, or out of the balance, if any, which may be available from out of the provision in respect of contingent liabilities as reckoned for the purposes of this scheme after the extent of such liabilities has finally been ascertained,
 - (a) pay to the Corporation the amount received by the transferee bank from the Corporation under sub-section (2) of section 18 of the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation Act, 1961 and the amount, if any, provided for by the Corporation, and
 - (b) pay, in the case of depositors in respect of whom no amounts have been received by the transferee bank from the Corporation, the amounts due in respect of the collection accounts, and in the case of depositors, in respect of whom any amounts have been received by the transferee bank from the Corporation or have been provided for by the Corporation the balance if any due to them in their collection accounts after the amounts due from the said accounts to the Corporation in respect of the payment made or provided for by the Corporation have first been paid in accordance with the provisions of sub-clause (a) above ;
- Provided that the amount due to the Corporation shall, if it becomes necessary so to do, be provided for in the books of the transferee bank and be paid to the Corporation in the manner specified in clause (b) of regulation 22 of the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation General Regulations, 1961 ;
- Provided further that the transferee bank shall make the payments referred to in clause (b) above,
- (i) if the corresponding or similar account mentioned in clause (b) of paragraph (5) has not been closed or has not matured for payment, by credit to that account, and
 - (ii) if the said account has been closed or has matured for payment, in cash.

(vi) The amounts due to the Corporation in terms of sub-clause (a) of clause (v) above and the amounts due to the collection accounts of the depositors in terms of sub-clause (b) of that clause shall rank equally among themselves, and if they cannot be paid in full shall abate in equal proportions;

(vii) After the payments referred to in clause (v) of this paragraph have been made or provided for in full, the transferee bank shall, out of the balance of the amounts referred to in clause (v) which may be available to it, make payments pro rata towards the amounts, if any, due to the accounts of the former shareholders, of the transferor bank in the manner and to the extent specified below:

(a) in the first place, the amounts, if any due to the accounts of the former preference shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made;

(b) in the second place, the amounts, if any, due to the accounts of the former ordinary shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made; and thereafter;

(c) in the third place, the amounts, if any, due to the accounts of the former deferred shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made;

(d) after all the amounts mentioned in sub-clauses (a), (b) and (c) above have been paid in full, the surplus, if any, remaining in the hands of the transferee bank shall be distributed pro rata among the former ordinary shareholders of the transferor bank.

Provided that if any question arises whether any amounts are due against an account mentioned in any of the above sub-clauses, it shall be referred to the Reserve Bank of India whose decision thereon shall be final.

(viii) the amounts due to the collection accounts referred to in this paragraph shall be deemed to be a liability of the transferee bank only to the extent provided for in this scheme;

(ix) on the expiry of twelve years from the prescribed date or such earlier period as the Central Government after consulting the Reserve Bank of India may specify for this purpose, any item referred to in clause (ii) of this paragraph which may not have been realised by that date shall be valued by the transferee bank in consultation with the Reserve Bank of India and the transferee bank shall distribute any amount or amounts determined in the light of that

valuation after deducting therefrom first any sum necessary for meeting the liabilities referred to in clause (iv) of this paragraph which may remain unsatisfied as on that date in the order and the manner provided in clauses (v), (vi) and (vii) above.

(x) The transferee bank shall invest such moneys realised on account of items mentioned in the preceding clauses (i), (ii) and (iii) as are not likely to be required by it for immediate payment, in interest bearing deposits with itself or with any other bank or banks, in such manner and for such periods as may be appropriate having regard to the facts and circumstances of the case or as the Reserve Bank of India may direct. The interest accrued shall be applied for meeting the liabilities referred to in clauses (iv), (v), (vi) and (vii) in the manner indicated therein.

(7) Notwithstanding anything to the contrary contained in any contract, express or implied, interest shall be paid in respect of the new accounts opened with the transferee bank in terms of paragraph (5) and credited in accordance with the provisions of that or the next succeeding paragraphs only at such rates as the transferee bank may allow.

(8) No depositor or other creditor of the transferor bank shall be entitled to make any demand against the transferor bank or the transferee bank in respect of any liability of the transferor bank to him except to the extent prescribed by this scheme.

(9) No suit or other legal proceedings shall lie against the Central Government, the Reserve Bank of India or the transferee or the transferor bank for anything which is in good faith done or intended to be done in pursuance of this scheme.

(10) All the employees of the transferor bank other than those specified in the schedule referred to in the succeeding paragraph shall continue in service and be deemed to have been appointed by the transferee bank at the same remuneration and on the same terms and conditions of service as were applicable to such employees immediately before the close of business on 27th April, 1985:

Provided that the employees of the transferor bank who have, by notice in writing given to the transferor or the transferee bank at any time before the expiry of one month next following the date on which this scheme has been sanctioned by the Central Government, intimated their intention of not becoming employees of the transferee bank, shall be entitled to the payment of such compensation, if any, under the provisions of the Industrial Disputes Act, 1947 and such pension, gratuity, provident fund and other retirement benefits as may be ordinarily admissible under the rules of authorisations of the transferor bank immediately before the close of business on 27th April 1985:

Provided further that the transferee bank shall in respect of the employees of the transferor bank who are deemed to have been appointed as employees of

the transferee bank be deemed also to have taken over the liability for the payment of retirement compensation in the event of their being retrenched while in the service of the transferor bank on the basis that their service has been continuous and has not been interrupted by their transfer to the transferee bank.

(11) The persons specified in the schedule annexed to this scheme shall on the prescribed date cease to be the employee of the transferor bank and notwithstanding anything contained in any law for the time being in force or any agreement or contract, the persons so specified shall be entitled to and only to such pension, gratuity, provident fund and other retirement benefits as may be lawfully admissible to them under the rules or authorisations of the transferor bank immediately before the close of business on 27th April, 1985:

Provided that the compensation, if any, for the loss of employment, so far as it relates to the unexpired portion of any contract or service, shall be such and only such as may be determined by the Reserve Bank (whose determination in this respect shall be final and binding):

Provided further that nothing herein shall be deemed to prevent the transferee bank from employing any person whose name has been specified in the schedule annexed to this scheme in such capacity and on such terms and conditions as the transferee bank may deem fit.

(12) The transferee bank shall on the expiry of period not longer than three years from the date on which this scheme is sanctioned, pay or grant to the employees of the transferor bank the same remuneration and the same terms and conditions of service as are applicable to the employees of corresponding rank or status of the transferee bank subject to the qualifications and experience on the said employees of the transferor bank being the same as or equivalent to those of such other employees of the transferee bank.

Provided that if any doubt or difference arises as to whether the qualifications or experience of any of the said employees are the same as or equivalent to the qualifications and experience of the other employees of corresponding rank or status of the transferee bank or as to the procedure or principles to be adopted for the fixation of the pay of the employees in the scales of pay of the transferee bank, the doubt or difference shall be referred to the Reserve Bank of India whose decision thereon shall be final.

(13) The trustees or administrators of any provident fund and/or gratuity fund constituted for the employees of the transferor bank or as the case may be the transferee bank shall on or as soon as possible after the prescribed date transfer to the trustee of the employees provident fund and/or gratuity fund constituted for the transferee bank, or otherwise as the transferee bank may direct all the monies and investment held in trust for the benefit of the employees of the transferor bank

Provided that such latter trustees shall not be liable for any deficiency in the value of investments, or in respect of any act, neglect, or default done before the prescribed date.

(14) The transferee bank shall submit to the Reserve Bank of India such statements and information as may be required by the Reserve Bank of India from time to time including the implementation of this scheme.

(15) The transferee bank shall furnish to the shareholders of the transferor bank a statement of affairs of the transferor bank in such form and at such periodical intervals as the Reserve Bank of India may specify in this behalf. The sending of such statements shall be discontinued when so directed by the Reserve Bank.

(16) Any notice or other communication required to be given by the transferee bank shall be considered to be duly given if addressed and sent by pre-paid ordinary post to the addressee at the address registered in the books of the transferor bank, until a new address is registered in the books of the transferee bank, and such notice shall be deemed to be served on the expiry of forty-eight hours after it has been posted. Any notice or communication which is of general interest shall be advertised in addition in one or more daily newspapers which may be in circulation at the places where the transferor bank was transacting its business.

(17) If any doubt arises in interpreting any of the provisions of this scheme, the matter shall be referred to the Reserve Bank of India and its opinion shall be conclusive and binding on both the transferee and transferor banks, and also on all the members, depositors and other creditors and employees of each of these banks and on any other person having any rights or liability in relation to any of these banks.

(18) If any difficulty arises in giving effect to the provisions of this scheme, the Central Government may issue to the transferor and the transferee banks or to either of them such directions not inconsistent with this scheme as may appear to the Central Government, after consulting the Reserve Bank of India, to be necessary or appropriate for the purpose of removing the difficulty.

[F. No. 17/11 85-B.O.III-(ii)]

SCHEDULE

Schedule attached to and forming part of the scheme for the amalgamation of the Bank of India Ltd. sanctioned by the Central Government under Sub-section (7) of Section 45 of the Banking Regulation Act 1949 (10 of 1949)

Sl. No.	Name of the employee	Description in the transferor bank
1	2	3
1	Shri P. I. John	Chairman
	Shri Joseph Fern	Vigilance Officer

1	2	3
3. Smt. Marykutty Tharian	Programme Co-ordinator	
4. Shri C.D. Antony	General Manager	
5. Shri George Vanniam (Under Suspension)	Ex-Personnel Manager	
6. Shri K.P. Paul (Under suspension)	Officer	
7. Shri M.C. Jose (Under suspension)		
8. Shri T.T. Jose	Branch Manager Chowannoor Branch	
9. Shri C.J. Laurence	Officer, Perumanoor Branch	
10. Shri R. Parthasarathy	Officer, Coimbatore	
11. Shri D.J. Manadan	Officer, Pottassery Branch	
12. Shri Paul Francis A.	Officer, Katoor Branch.	
13. Shri M.J. Thomas	Manager, Trichy Branch	
14. Shri T.J. Nainan	Manager, Changanacherry Branch	
15. Shri M.T. Antony	Officer, Puthuvip	
16. Shri K.M. Cherian	Branch Manager, Perumbavoor	
17. Shri Johny Paul	Officer, Ernakulam, Broadway	
18. Shri M.P. Sebastin	Branch Manager, Mattancherry	
19. Shri K.T. Thomas	Inspector of Branches, H.O.	
20. Shri A. Sanker Parameswaran	Officer, H.O.	
21. Shri U.P. Varghese	Joint Manager	

का. अ. 623 (अ) :- बैंकिंग विनियमन अधिनियम, 1949 (1949 का 10) की धारा 45 की उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए और दिनांक 27 अप्रैल, 1985 को इस मंत्रालय की अधिसूचना स. टी. एन./1/85-बी. ओ. III में संशोधन करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्वारा निदेश देती है कि बैंक आफ कोचीन लि., कोचीन के संबंध में उसके द्वारा जारी किये गये स्थगनादेश 25 अगस्त, 1985 तक जिसमें यह तारीख भी शामिल है, लागू रहेगा।

[सं. एक. 17/11/85-बी. ओ. III (iii)]

S.O. 623(E).—In exercise of the powers conferred by sub-section 2 of Section 45 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949), and in modification of this Ministry's Notification F. No. TS/1/85-B.O. III dated the 27th April, 1985, the Central Government, hereby directs that the order of moratorium made by it in respect of the Bank of Cochin Ltd., Cochin, shall remain in force upto and including the August, 25 1985.

[No. F. 17/11/85-B.O.III (iii)]

का० अ० 624 (अ) :- केन्द्रीय सरकार, बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 (1949 का 10) की धारा 45 की उपधारा (7) के अनुसरण में लक्ष्मी कमर्शियल बैंक लिमिटेड, नई दिल्ली के केनरा बैंक के साथ समामेलन की स्कीम के संबंध में जो उक्त उपधारा के उपबन्धों के अधीन केन्द्रीय सरकार द्वारा मंजूर की गयी है, 24 अगस्त, 1985 को विहित तारीख के रूप में विनिर्दिष्ट करती है।

[सं. एक० 17/12/85-बी. ओ. III (i)]

S.O. 624(E).—In pursuance of sub-section (7) of section 45 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949), the Central Government hereby specifies the 24th August, 1985 as the prescribed date in relation to the scheme for the amalgamation of the

Lakshmi Commercial Bank Limited, New Delhi, with Canara Bank which has been sanctioned by the Central Government under the provisions of the said sub-section.

[No. F. 17/12/85-B.O. III(i)]

का. अ. 625 (अ) :- केन्द्रीय सरकार ने बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 (1949 का 10) की धारा 45 की उपधारा (1) के अधीन एतद्वारा रिजर्व बैंक द्वारा किए गए अधिनियम पर, उक्त धारा की उपधारा (2) के अधीन, लक्ष्मी कमर्शियल बैंक लिमिटेड, नई दिल्ली के संबंध में उक्त धारा 45 की उपधारा (2) के अधीन अधिनियमन आदेश किया है।

और एतद्वारा रिजर्व बैंक ने उक्त अधिनियम की धारा 45 की उपधारा (4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केनरा बैंक के साथ लक्ष्मी कमर्शियल बैंक लिमिटेड के समामेलन का स्कीम तैयार की है।

और रिजर्व बैंक ने उक्त धारा की उपधारा (6) के उपबन्धों के अनुसार उक्त स्कीम का प्रारूप संबंधित बैंकों की भेजने के पश्चात् और उक्त स्कीम की वास्तव प्राप्त सुझावों और आक्षेपों पर विचार करने के पश्चात् यह स्कीम उपान्तरित की है और उसे मंजूरी के लिए केन्द्रीय सरकार को भेजा है।

अब अब केन्द्रीय सरकार ने उक्त अधिनियम की धारा 45 की उपधारा (7) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए इसमें आगे वर्णित निबन्धनों और शर्तों के अधीन रहते हुए इस स्कीम की मंजूरी दे दी है।

1 लक्ष्मी कमर्शियल बैंक लिमिटेड, नई दिल्ली अन्तरक बैंक होगा और केनरा बैंक अन्तरिक्त बैंक होगा।

2 ऐसी तारीख से जिसे केन्द्रीय सरकार उक्त अधिनियम की धारा 45 की उपधारा (7) के अधीन इस प्रयोजन के लिए विनिर्दिष्ट करे (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'विहित तारीख' कहा गया है), अन्तरक बैंक के सभी अधिकार, शक्तियां, मान, दावे, हित, प्राधिकार, विशेषाधिकार, लाभ, आस्थियां और जंगल और स्थावर सम्पत्ति, जिसके अन्तर्गत भू-धृति के सभी आपतनों या पट्टों या करारों द्वारा आरक्षित और उनमें अर्जित/भाटकों और अन्य धनसंस्थितियों और प्रतिज्ञाओं के अधीन परिसर, जिस के अधीन वे धारित हैं, सभी कार्यालय फर्नीचर, वित्तियत उपकरण, संयंत्र, यंत्र और साधन, बहो, कागज-पत्र, लेखन सामग्री स्टॉक, अन्य स्टॉक और सामान, सभी स्टॉक विनिधान, शेयर और प्रतिभूतियां, हाथ में और अर्जित वृद्धन में प्राप्त सभी हुण्डियां, सभी ह्रास की और लेखा की रोकड़ या बैंकों के पास निक्षेप लेखा (जिन्हें अन्तर्गत मांग पर या संक्षिप्त सूचना पर धन भी है), वृत्तियत, सभी वही वृद्धन, वृद्धन ऋण और प्रतिभूतियों के फायदे सहित अन्य ऋण या उपायों कोई प्रत्याभूति अन्तरक बैंक के कारखाने के संबंध में सभी अन्य, यदि कोई हों, संपत्ति अधिकार और सभी प्रत्याभूतियों के आस्ति संबंधी फायदे, इस स्कीम के अन्य उपबन्धों के अधीन रहते हुए अन्तरिक्त बैंक को अन्तरित हो जाएंगे और उसकी संपत्ति और आस्थियां वन जाएंगे और विहित तारीख से ही अन्तरक बैंक के सभी दायित्व, कर्तव्य और फायदे, इसमें इसके पश्चात् उपबंधित विस्तार तक और रीति में अन्तरिक्त बैंक के दायित्व, कर्तव्य और बाध्यताएं होंगी और वन जाएंगे।

पूर्ववाची उपबन्धों की व्यापकता पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना सभी संविदाएं, विलेख, बंधपत्र, करार, मुहतावरनाम, विधिक प्रतिनिधित्व की मंजूरियां और किसी भी प्रकृति की अन्य लिखतें जो विहित तारीख के ठीक पहले आस्तित्वशील या प्रभावशाली हों, अन्तरिक्त बैंक के विरुद्ध या उसके पक्ष में इसमें आगे उपबंधित विस्तार तक और रीति में प्रभावशाली होंगी और जैसे ही कार्यान्वित की जा सकेंगी मानो अन्तरक बैंक के स्थान पर अन्तरिक्त बैंक उनमें पक्षकार रहा हो, मानो वे अन्तरिक्त बैंक के पक्ष में जारी की गई हों।

यदि विहित तारीख को अन्तरक बैंक द्वारा या उसके विरुद्ध कोई वाद अपील या किसी भी प्रवृत्ति की कोई अन्य निष्पत्ति कार्यवाही लंबित है तो उसका उपपन्न नहीं होगा, वह बन्द नहीं होगी या उस पर किसी भी रूप से प्रतिबन्ध प्रभाव नहीं पड़ेगा, किन्तु वह इस स्कीम के अन्य उप-बंधों के अधीन रहते हुए, अन्तरिक बैंक के द्वारा या उसके विरुद्ध जारी रखी जा सकेगी और प्रवृत्ति की जा सकेगी।

यदि भारत से बाहर के किसी देश की विधि के अनुसार इस स्कीम के उपबन्ध उस देश में स्थित किसी ऐसी अस्थि या दायित्व की जो अन्तरक बैंक के उपक्रम के भाग हैं, अन्तरिक बैंक को अन्तरित या उसमें निहित करने का प्रभाव स्वयं नहीं रखते तो ऐसी अस्थि या दायित्व के संबंध में अन्तरक बैंक या कार्यपालक विहित तारीख में अन्तरिक बैंक के तत्काल के मुख्य कार्यपालक अधिकारी में लास हो जाएगा और वह मुख्य कार्यपालक अधिकारी ऐसी सभी प्रवृत्तियों का प्रयोग कर सकेगा तथा ऐसे सभी कार्य और बातें कर सकेगा, जो प्रत्येक रूप में इसके कार्यपालक के परिगमपन के प्रयोजन के लिए अन्तरिक बैंक द्वारा प्रयुक्त की जा सकेंगी या की जा सकती हैं। मुख्य कार्यपालक अधिकारी ऐसा अन्तरण और निहित करने के प्रयोजन के लिए ऐसा सभी कार्यवाही करेगा जो भारत के बाहर किसी ऐसे देश की विधियों द्वारा अपेक्षित हो और उस संबंध में मुख्य कार्यपालक अधिकारी या तो स्वयं या अपने द्वारा इस निमित्त प्राधिकृत किसी व्यक्ति के द्वारा अन्तरक बैंक की अस्थियां वसूल कर सकेगा या उसके दायित्व का निवहन करेगा और उसके शुद्ध आगमों का अन्तरिक बैंक को अन्तरित कर देगा।

3. अन्तरक बैंक की बहियां बन्द की जाएंगी और उनकी तुलन की जाएगी और तुलन-पत्र प्रथमतः 27 अप्रैल, 1985 को कारबार की समाप्ति पर और तत्पश्चात् विहित तारीख की ठीक पूर्ववर्ती तारीख को कारबार की समाप्ति पर तैयार किया जाएगा तथा तुलन-पत्र चार्टर्ड बैंक-कार या चार्टर्ड लेखाकारों की किसी ऐसी फर्म द्वारा जो भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा इस प्रयोजन के लिए अनुमोदित या अनिर्दिष्ट की गई हो, संपरीक्षित और प्रमाणित कराए जाएंगे।

पूर्वगामी पैरा के उपबन्धों के अनुसार तैयार की गई अन्तरक बैंक के तुलन-पत्र की प्रत्येक प्रति अन्तरक बैंक द्वारा प्राप्त हो जाएगी के पश्चात् यथासंभव शीघ्र कंपनी रजिस्ट्रार के पास फाइल की जाएगी और तत्पश्चात् अन्तरक बैंक से तुलन-पत्र या ता और प्रति निम्न तैयार करने या उसे मदद्यों के समक्ष प्रस्तुत करने या उसका प्रतियां कंपनी रजिस्ट्रार के पास फाइल करने की या तुलन-पत्र और लेखों पर विचार करने के प्रयोजन के लिए या किसी अन्य प्रयोजन के लिए या कंपनी अधिनियम, 1956 की धारा 159 के उपबंधों के अनुपालन करने के लिए बाँक साधारण अधिवेशन बुलाने की अपेक्षा नहीं की जाएगी और तत्पश्चात् अन्तरक बैंक के निदेशक बोर्ड के लिए उन अधिनियम की धारा 285 की अपेक्षाओं द्वारा अधिवेशन करना आवश्यक नहीं होगा।

4. 1. अन्तरिक बैंक, अन्तरक बैंक के परामर्श से निम्नलिखित उपबन्धों के अनुसार अन्तरक बैंक की सम्पत्तियों और अस्थियों का मूल्यांकन करेगा और दायित्वों की संगणना करेगा, अर्थात्—

- (क) सरकारी प्रतिभूतियों से निम्न विनिर्धारित मूल्यांकन विहित तारीख की ठीक पूर्ववर्ती तारीख को विद्यमान बाजार दरों पर किया जाएगा।
- (ख) सरकारी प्रतिभूतियों का मूल्यांकन भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 की धारा 24 के प्रयोजन के लिए जारी की गई अधिसूचना में अधिकृत सिद्धांतों के अनुसार विहित रीति में ठीक पूर्ववर्ती तारीख को यथा विद्यमान रूप में किया जाएगा।

(2) केन्द्रीय सरकार की प्रतिभूतियों जैसे डाक्टर-प्रमाणपत्र ट्रेजरी वचन निक्षेप प्रमाण-पत्र और केन्द्रीय सरकार की

का सरकारी बंधनों के अधीन जारी की गई कोई अन्य प्रतिभूतियों या प्रमाणपत्रों का मूल्यांकन उनके अंकित मूल्य के आधार पर या उनके मूल्यांकन को लेकर उनके मूल्य के आधार पर इन दोनों में से जो भी उच्चतर हो, किया जाएगा।

(3) जहाँ किसी सरकारी प्रतिभूति जैसे संपत्तियों उत्पन्न बंधनपत्र या अन्य संपत्ति प्रतिभूति जिसका बावत मूल्य निम्नलिखित में देश है, का बाजार मूल्य अधिनियमित नहीं किया जा सकता है या जहाँ बाजार मूल्य यह माना जाता है कि वह उचित उचित रूप में निर्धारित नहीं कर सकता है या जहाँ बाजार मूल्य नहीं है, तो प्रतिभूति का मूल्यांकन उचित रूप पर किया जाएगा जो तब तक कि जाने वाले बाजार मूल्य और उचित बाजार मूल्यों की उस बाजार-मूल्य को निर्धारित दौरान ऐसी निम्नलिखित है, सरकार द्वारा जारी की गई किसी प्रतिभूति के मूल्य को जिससे प्रतिभूति का संबंध है और जिसकी कीमत हो या लगभग वही हो परिकल्पना में यथा अन्य उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखते हुए, निर्धारित किया जाएगा।

(ग) जहाँ किसी प्रतिभूति, शेयर, डिबेंचर, बंधन पत्र या अन्य विनिधान का बाजार मूल्य उनके प्रमाणपत्र बंधनों से प्रभावित हो जाने के कारण मुश्किल नहीं माना जाता है, वहाँ विनिधान का मूल्यांकन किसी मुश्किल कारणाधि के दौरान उसके धोपत बाजार मूल्य के आधार पर किया जाएगा।

(घ) जहाँ किन्हीं प्रतिभूति, शेयर या डिबेंचर या अन्य विनिधान का बाजार मूल्य निर्धारित नहीं किया जा सकता है, वहाँ बाजार मूल्य उनके मूल्यांकन पर विचार न किया, पूर्ववर्ती पाँच बंधनों के अधीन उनके बाजार मूल्य मानों और प्रत्येक सुनिश्चित बातों को ध्यान में रखते हुए, केवल ऐसे मूल्य को, यदि कोई है, विचार में लिया जाएगा जो मुश्किल मूल्य माना जाएगा।

(ङ) बाँक के मुद्रित के लिए अधिनियम अधिनियमों और अन्य सभी अन्य विनियमों में निर्धारित आस्थाओं का मूल्यांकन उनके बाजार मूल्य पर किया जाएगा।

(च) फर्निचर और फिक्स्चर, स्टाक का लेखन सामग्री और अन्य अस्थियां, यदि कोई हो, का मूल्यांकन प्रति वह अधिकृत मूल्य के आधार पर या बाजार मूल्य के आधार पर, जो वह मुश्किल माना जाए, किया जाएगा।

(छ) अस्थियों, जिनके प्रमाणपत्र कदम की गई और मितिकाल पर सुपान का गई दुर्घटनाओं हैं, वह कृपों और विविध अस्थियों का संवत्सा अन्तरिक बैंक द्वारा की जाएगी और प्रतिभूतियों जिनके प्रमाणपत्र उनके बाजार के रूप में स्थापित प्रमाणपत्रों हैं, अन्तरिक बैंक द्वारा निर्धारित और स्थापित की जाएगी। तत्पश्चात् अधिकृत अस्थियों के प्रमाणपत्र उनके भाग हैं, दो अस्थियों से बनी हुई कि जायें, अर्थात् "वे अधिनियम जिन्हें अच्छा और अस्थिर से वसूल योग्य माना गया है और "वे अधिनियम, जिन्हें फाइल से वसूल योग्य नहीं माना गया है और या जिनके बगुनी बंधन या अस्थिर है। (ii) इस प्रकार के प्रयोजनों के लिए अधिकृत के अन्तर्गत ऐसे सभी सम्पत्ति दायित्व हैं, जिनके लिए अन्तरिक बैंक से विहित तारीख को या उसके पश्चात् अपने स्वयं के मोर्तों से उचित रूप से पूर्ति करने का धारा या अपेक्षा की जा सकेगी। (iii) जहाँ किसी अस्थि का मूल्यांकन विहित तारीख को अवधारित नहीं किया जा सकता है, वहाँ वह भारतीय रिजर्व

बैंक के अनुमोदन से, भागत या पूर्णतः किस पश्चात्पूर्व तारख का बमल योग्य प्राप्ति के रूप में माना जाएगा।

निम्न आस्ति के मूल्यांकन और या किस अग्रिम के वर्गीकरण और या किस दायित्व के अवधारण के बाबत अन्तरित बैंक और अन्तरक बैंक के बीच कोई असहमति है, तो वह समझौता भाग 7 रिजर्व बैंक को निर्दिष्ट किया जाएगा जिसके साथ अग्रिम होगा परन्तु जब तक ऐसे राश प्राप्त नहीं हो जाते तब तक अन्तरित बैंक द्वारा मदी या उसके भाग का मूल्यांकन इस स्क्रम के प्रयोजन के लिए अन्तर्निम रूप से अपनया जाएगा।

ऐसा करना आवश्यक होने के दशा में रिजर्व बैंक के लिए ऐन तकनक राश प्राप्त करना आवश्यक होगा जो वह अग्रिम के ऐम किम मद के मूल्यांकन या दायित्व के ऐसा किम मद के अवधारण में पदध में समुचित समझे, और ऐस राश अग्रिमप्राप्त करने का वय्य अन्तरक बैंक के आस्तियों में से पूर्ण रूप से देय होगा।

पूर्वगामी उपबन्धों के अनुसार आस्तियों का मूल्यांकन और दायित्वों का अवधारण दोनों बैंको और उसके सदस्यों और लेनदारों पर आवश्यक होगा।

5 अन्तरक बैंक के वपति और आस्तियों के अन्तरित बैंक को अन्तरण होने के प्रतिफल स्वरूप अन्तरित बैंक इसे और निम्नलिखित खण्डों में वर्णित विस्तार तक अन्तरक बैंक के दायित्वों का निर्वहन करेगा, अर्थात् —

(क) विहित तारीख तक कर्णचारे वृन्द प्रतिभूति निक्षेपों सहित उस पर प्रोद्भूत व्याज, यदि कोई है, के साथ उस बैंक के पास अन्तरक बैंक के किम कर्मचार द्वारा जमा क गई कोई धनराशि और विहित तारीखों को सभी अन्य बाह्य दायित्वों के अन्तर्गत निक्षेप नहीं है, सदत किए जाएंगे या उनके पूर्ण व्यवस्था क जाएंगे।

स्पष्टीकरण

इस पैरा के प्रयोजन के लिए विहित तारख तक निक्षेप पर देय व्याज समूह निक्षेप का भाग माना जाएगा।

(ख) प्रत्येक वचत बैंक खाते या चालू खाने या किस अन्य निक्षेप के बाबत जिसके अन्तर्गत मावधि निक्षेप, तकद प्रमाण-पत्र, मासिक निक्षेप, मा। या सक्षिप्त सूचना पर देय निक्षेप या अन्तरक बैंक के पास कोई अन्य निक्षेप चाहे वे किस भी नाम से ज्ञात जाने हो और कोई अन्य खाते जो खण्ड (क) के अन्तर्गत नहीं आते हैं जिसके अन्तर्गत इस स्क्रम के अधीन देय समझौता व्याज भूत है। अन्तरित बैंक विहित तारख का संबंधित धारक/को के नाम में एक तत्समान और वैसा ही खाना दानेगा जिसमें विहित तारख को इस स्क्रम के प्रयोजनों के लिए पैरा (4) में निर्दिष्ट यथा मूल्यांकित आस्तियों में से प्रत्येक खाते के संबंध में उपलब्ध आनुपातिक शेषर मूल्य के रूप में जमा करेगा और इस प्रकार मूल्यांकित उक्त आस्तियों में से वे अग्रिम जो आसान से वसूल योग्य नहीं माने गए हैं, या डूबत हैं या जिनके बमल शकारूप है, कोई अन्य आस्तिया या आस्ति के भाग जो विहित तारख को मूल्यांकित नहीं है और अन्य रकम जो उपर खण्ड (क) में वर्णित सदाय या उपबन्धों के लिए अपेक्षित हैं, अपवर्जित किए जाएंगे और इस प्रकार मूल्यांकित उक्त आस्तियों में अन्तरक बैंक को जारी किए गए तारीख 27 अप्रैल, 1985 के अधिसूचना आदेश के पैरा 2 के खण्ड (क) (1) के आधार पर किए गए सदायों के सकलित रकम जोड़ेगा।

परन्तु 27 अप्रैल, 1985 को कारबार के समाप्ति को या उसके पश्चात् और विहित तारख के पूर्व किस निक्षेप खाते से किए गए किस सदाय के संगणना इन उप पैरा के अधिन जमा क जाने वाले रकम के मदों का भाग और तदनुसार जमा क जाने वाले रकम आनुपातिक शेषर भाग, जिसमें ऐसे सदाय के रकम कम कर द जाएंगे, परन्तु यह और कि जहां अग्रिम बैंक को किस विशेष दाने में क गई प्रविष्टियों के सह होने के बारे में कोई व्यक्तिबुद्ध सदेय है तो वह रिजर्व बैंक के अनुमोदन में उपर खण्ड (ग) के आधार पर उस लेख में किए जाने वाले जमा धनराशि को प्रति-धारित कर सकेगा जब तक कि अन्तरित बैंक ऐसे खाते में नहीं अतिशेष अभिनिश्चित नहीं कर लेता है।

स्पष्ट करण

“आनुपातिक पद से, जहां तक वह इस पैरा में आता है ऐसे संबंधित रकमों के अनुपात में अभिप्रेत है जो 27 अप्रैल, 1985 को कारबार के समाप्ति पर बकाया देय हैं (विहित तारख के ठक पूर्ववर्ती तारख तक देय व्याज सहित) और जहां तक वह इस स्क्रम में अन्यत्र आता है, से ऐसे संबंधित रकमों के अनुपात में अभिप्रेत है जो सदाय या विवरण के समय बकाया देय हैं।”

(ग) उपर खण्ड (ख) में निर्दिष्ट जमा धनराशि दिए जाने के पश्चात् अन्तरित बैंक संभवत कम से कम विनियम से कित्नु विहित तारख से तन मास तक निक्षेप ब मा और प्रत्यय गारट निगम अधिनियम, 1961 के अधिन स्थापित निक्षेप ब मा और प्रत्यय गारट निगम को (जिसे इसमें इसके पश्चात् निगम कहा गया है) एक सूच देगा, जिसमें सभी प्रकार से उस अधिनियम के धारा 18 को उपधारा (1) के अपेक्षाओं का अनुपालन किया गया है, और तत्पश्चात् जब भी उस अधिनियम के धारा 18 के उपधारा (2) में निर्दिष्ट रकम निगम से प्राप्त हो, अन्तरित बैंक उस तारीख या तारीखों से जिसको रकम प्राप्त होत है, सात दिन के अन्दर उस खाते में देय धनराशि के विस्तार तक, उस अधिनियम के धारा 18 के उपधारा (2) के अनुसार उपर खण्ड (ख) में निर्दिष्ट प्रत्येक खाते में जमा करेगा।

परन्तु —

(क) यदि खण्ड (ख) में निर्दिष्ट कोई खाता बन्द कर दिया गया है या वह ऐसे समय पर जब उस खाते में जमा के लिए रकम निगम से प्राप्त होता है, परिपक्व हो गया है तो उक्त रकम के हकदार व्यक्ति को सदाय अन्तरित बैंक द्वारा तकद रूप में किया जाएगा,

(ख) यदि खण्ड (ख) में निर्दिष्ट किम रकम के हकदार व्यक्ति का पता नहीं लगाया जा सकता है या उसका आसान से पता नहीं चल पा रहा है तो ऐसे व्यक्ति को देय रकम के लिए उपबन्ध स्वयं निगम को बहियों में किया जाएगा और उक्त पृथक रूप से लेखा दिया जाएगा तथा अन्तरित बैंक को किम रकम का सदाय करना निगम के लिए आवश्यक नहीं होगा जब तक कि रकम का हकदार व्यक्ति मिल नहीं जाता है या उसका पता नहीं चल जाता है और निगम ने अन्तरित बैंक के माध्यम से उस व्यक्ति के बाबत सदाय करने का विनिश्चय नहीं कर लिया है।

(ग) विहित तारीख को अन्तरित बैंक के समादत्त पूज का सपूर्ण रकम और आरक्षित को डूबत और शकास्पद ऋण के लिए उपबन्ध के रूप में माना जाएगा और

परन्तु यह कि निगम को शोध रकम, यदि ऐसा करना आवश्यक हो तो, अन्तर्गत बैंक क बहियों में उपबंधित की जायें तथा निक्षेप बमा और प्रत्यय गारंट निगम साधारण विनियम, 1961 के विनियम 22 के खण्ड (ख) में विनिर्दिष्ट र ति से निगम को संदत्त क जायें ।

परन्तु यह और कि अन्तरिक्ष बैंक, उपर्युक्त खण्ड (ख) में विनिर्दिष्ट मस्य उम्र दशा में रहेगा -

- (1) यदि पैरा (5) के खण्ड (ख) में उल्लिखित तन्मामन या समरूप खाने को बंद नहीं किया गया है या वह उम्र खाने में प्रत्यक्ष द्वाग भुगतान के लिए परिपक्व नहीं हुआ है, और
 - (2) यदि उक्त खाने को बंद कर दिया गया है या वह नकद भुगतान के लिए परिपक्व हो गया है।
 - (vi) उपर्युक्त खण्ड (v) के उपखण्ड (क) के निबंधनों के अनुसार निगम को शोध्य रकमों और उम्र खण्ड के उपखण्ड (ख) के निबंधनों के अनुसार निक्षेपकर्ताओं के संग्रहण खाते में शोध्य रकमों की श्रेणी आपस में समान होगी और यदि उनका मदाय पूर्णतः नहीं किया जा सकता तो उनमें समान आपात में कमी होगी,
 - (vii) इस पैरा के खण्ड (v) में निर्दिष्ट सदाय के लिए जाने या पूरा उपबधित किए जाने के पश्चात् अन्तरिक्ष बैंक खण्ड (v) में निर्दिष्ट रकमों के उम्र अतिशेष, जो उसके पास उपलब्ध हों, में से, अन्तरिक्ष बैंक के भूतपूर्व शेयर धारकों के खाते में शोध्य रकम, यदि कोई हो, हेतु ऐसी रति से और उम्र मीमा तक, जो नीचे विनिर्दिष्ट है, आनुपातिक सदाय करेगा
 - (क) प्रथमतः सब खाते के लिए पूर्णतः सदाय किए जाने तक अन्तरिक्ष बैंक के भूतपूर्व अधिमान शेयर धारकों के खाते में शोध्य रकम यदि कोई हो,
 - (ख) द्वितीयतः सब खाते के लिए पूर्णतः सदाय किए जाने तक अन्तरिक्ष बैंक के भूतपूर्व सामान्य शेयरधारकों के खाते में शोध्य रकम यदि कोई हो और उसके पश्चात्,
 - (ग) तृतीयतः सब खाते के लिए पूर्णतः सदाय किए जाने तक अन्तरिक्ष बैंक के भूतपूर्व आस्थायित शेयरधारकों के खाते में शोध्य रकम यदि कोई हो,
 - (घ) उपर्युक्त उपखण्ड (क), (ख) और (ग) में उल्लिखित सब रकम को पूर्णतः सदाय करने के पश्चात् अन्तरिक्ष बैंक के पास बाकी बचे अधिशेष का अन्तरिक्ष बैंक के भूतपूर्व सामान्य शेयरधारकों के वच आनुपातिक वितरण किया जाएगा
- परन्तु यह कि यदि कोई प्रश्न उठता है कि उपर्युक्त किसी उपखण्ड में उल्लिखित खाते के लिए कोई रकम शोध्य है या नहीं तो उसे भारतीय रिजर्व बैंक को निर्दिष्ट किया जाएगा जिसका उस पर विनिश्चय अन्तिम होगा।
- (viii) इस पैरा में निर्दिष्ट संग्रहण खाते में शोध्य रकम के बारे में केवल अन्तरिक्ष बैंक का दायित्व उस सीमा तक समझा जाएगा जो इस स्कीम में उपबधित है;
 - (ix) विहित तारीख या ऐसी पूर्वतर अवधि से, जो केन्द्रीय सरकार, भारतीय रिजर्व बैंक से परामर्श करने के पश्चात्, इस प्रयोजन के लिए विनिर्दिष्ट करे, बारह वर्ष के अवसान पर, इस पैरा के खंड (ii) में निर्दिष्ट किसी ऐसी मद का, जो उस तारीख तक वसूल नहीं की जा सकी हो, मूल्यांकन अन्तरिक्ष बैंक द्वारा भारतीय रिजर्व बैंक के परामर्श से किया जाएगा और अन्तरिक्ष बैंक, उस मूल्यांकन को ध्यान में रखते हुए, अव-

धारित कोई रकम, इस पैरा के खण्ड (iv) में निर्दिष्ट दायित्वों की पूर्ति के लिए आवश्यक किसी ऐसी राशि की, जो उपर्युक्त खण्ड (v), (vi) और (vii) में उपबधित क्रम और रीति से उस तारीख तक चुकायी जाने से रह गई हो, पहले उम्र से कटौती करके वितरित करेगा;

- (x) अन्तरिक्ष बैंक, पूर्ववर्ती खण्ड (i), (ii) और (iii) उल्लिखित मदों के कारण वसूल किए गए ऐसे धन को, जिनकी तुल्य सदाय के लिए उसके द्वारा अपेक्षा किए जाने की सम्भावना नहीं है, अपने पास या किसी अन्य बैंक या बैंकों के पास व्याज वाले निक्षेपों में, ऐसी रीति से और ऐसी अवधि के लिए, जो मामले के तथ्यों और परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए उपयुक्त हो या जैसा भारतीय रिजर्व बैंक निदेश दे, विनिहित करेगा। प्रादुर्भूत व्याज को खण्ड (iv), (v), (vi) और (vii) में निर्दिष्ट दायित्वों की पूर्ति के लिए उनमें उपदर्शित रीति से उपयोजित किया जाएगा।

7 किसी अभिव्यक्त या विवक्षित मविदा में किसी प्रतिकूल बात के होने हुए भी, पैरा (5) के निबंधनों के अनुसार अन्तरिक्ष बैंक के पास खोले गए नए खाते की बाबत व्याज का सदाय किया जाएगा और उसे केवल उन या अगले उत्तरवर्ती पैराओं के उपबधों के अनुसार ऐसी दरों पर, जो अन्तरिक्ष बैंक अनुज्ञात कर, जमा किया जाएगा।

8. कोई भी निक्षेपकर्ता या अन्तरिक्ष बैंक का अन्य लेनदार, उसके प्रति अन्तरिक्ष बैंक के किसी दायित्व की बाबत अन्तरिक्ष बैंक या अन्तरिक्ष बैंक से, इस स्कीम द्वारा विहित सीमा के सिवाए, कोई मांग करने का हकदार नहीं होगा।

9. केन्द्रीय सरकार, भारतीय रिजर्व बैंक या अन्तरिक्ष बैंक या अन्तरिक्ष बैंक के खिलाफ किसी ऐसी बात के लिए कोई वाद या अन्य विधिक कार्यवाहिया नहीं होंगी, जो इस स्कीम के अनुमरण में सम्भावपूर्वक की गई है या की जाने के लिए आशयित है।

10 उत्तरवर्ती पैरा में विनिर्दिष्ट अनुसूची में विनिर्दिष्ट कर्मचारियों से भिन्न अन्तरिक्ष बैंक के सभी कर्मचारी सेवा में बने रहेंगे और यह समझा जाएगा कि उन्हें अन्तरिक्ष बैंक द्वारा उसी पारिश्रमिक और सेवा के उन्हीं निबंधनों और शर्तों पर नियुक्त किया गया है जो 27 अप्रैल, 1985 को कारबार बंद होने के ठीक पहले ऐसे कर्मचारियों को लागू थीं।

परन्तु यह कि अन्तरिक्ष बैंक के ऐसे कर्मचारी, जिन्होंने अन्तरिक्ष बैंक या अन्तरिक्ष बैंक को, उस तारीख के, जिसको यह स्कीम केन्द्रीय सरकार द्वारा मंजूर किया गया है, ठीक आगामी एक मास के अवसान के पूर्व किसी भी समय अन्तरिक्ष बैंक के कर्मचारी न होने के अपने आशय के बारे में लिखित सूचना द्वारा सूचित किया है, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 के उपबधों के अधीन ऐसे प्रतिकर, यदि कोई हो, और ऐसे पेंशन, उपदान, भविष्य निधि और सेवा निवृत्ति फायदे के मदाय के लिए हकदार होंगे, जो 27 अप्रैल, 1985 को कारबार के बंद होने के ठीक पहले अन्तरिक्ष बैंक के प्राधिकरण नियमों के अधीन सामान्य तौर पर अनुज्ञेय हो:

परन्तु यह और कि अन्तरिक्ष बैंक के ऐसे कर्मचारियों की बाबत, जिनके बारे में यह समझा जाता है कि उन्हें अन्तरिक्ष बैंक के कर्मचारियों के रूप में नियुक्त किया गया है, अन्तरिक्ष बैंक के बारे में भी यह समझा जाएगा कि उसने अन्तरिक्ष बैंक की सेवा में रहने के दौरान उनकी छटनी की दशा में इस आधार पर छटनी प्रतिकर के मदाय का दायित्व लिया है कि उनकी सेवा निरन्तर बनी रही है और अन्तरिक्ष बैंक में उनके स्थानान्तरण से विछिन्न नहीं हुई है।

11. इस स्कीम में उपाबद्ध अनुसूची में विनिर्दिष्ट व्यक्ति, विहित नारीख को अन्तरक बैंक के कर्मचारी नहीं रह जायेंगे और तत्समय प्रवृत्त किसी विधि या किसी करार या संविदा में किसी बान के होने हुए भी, इस प्रकार विनिर्दिष्ट व्यक्ति, केवल ऐसे पेंशन, उपदान, भविष्य निधि और अन्य सेवानिवृत्ति फायदे के हकदार होंगे, जो 27 अप्रैल, 1985 को कारबार के बन्द होने के ठीक पहले अन्तरक बैंक के प्राधिकरण नियमों के अधीन उन्हें सामान्य तौर पर अनुज्ञेय हों।

परन्तु यह कि नियोजन की हानि के लिए प्रतिकर, यदि कोई हो, जहां तक उसका संबंध सेवा की किसी संविदा के अनिवारित भाग में है, केवल वही होगा जो रिजर्व बैंक द्वारा अवधारित किया जाए (इस बाबत जिसका अवधारण अंतिम और अबाधक होगा)।

परन्तु यह और कि इसमें की किसी बान में यह नहीं समझा जाएगा कि वह अन्तरि बैंक को किसी ऐसे व्यक्ति के, जिसका नाम इस स्कीम में उपाबद्ध अनुसूची में विनिर्दिष्ट किया गया है, ऐसी हैमियन में और ऐसे निबंधनों और शर्तों पर, जो अन्तरि बैंक उचित समझे, पूर्णतया नियोजन करने से निवारित करती है।

12. अन्तरि बैंक, उस तारेख में, जिसको इसे स्कीम को मंजूर किया जाता है, तीन वर्ष में अतिरिक्त अवधि के अवसान पर, अन्तरक बैंक के कर्मचारियों को वह प्रास्थितिक और सेवा के वह निबंधन और शर्तें मदाय या मंजूर करेगा, जो अन्तरि बैंक के तत्समान बैंक या प्रास्थितिक के कर्मचारियों को, अन्तरि बैंक के ऐसे अन्य कर्मचारियों के समान या समतुल्य अन्तरक बैंक के उक्त कर्मचारियों के पास अर्हताएं और अनुभव के अधीन रहने हुए, लागू हों।

परन्तु यह कि यदि कोई शर्त या मतभेद उत्पन्न होता है कि उक्त कर्मचारियों में से किसे का अर्हताएं या अनुभव अन्तरि बैंक के तत्समान बैंक या प्रास्थितिक के अन्य कर्मचारियों को अर्हताएं और अनुभव के समान या समतुल्य है या नहीं या वह अन्तरि बैंक के वेतनमान में कर्मचारियों का वेतन नियत करने के लिए अपनाए जाने वाले सिद्धान्तों को धिया के संबंध में है, तो शर्त या मतभेद को भारतीय रिजर्व बैंक को निरदिष्ट किया जाएगा जिसका उस पर विनिश्चय अंतिम होगा।

13. यथास्थिति, अन्तरक बैंक या अन्तरि बैंक के कर्मचारियों के लिए गठित किसी भविष्य निधि और या उपदान निधि के न्याय या प्रशासक, विहित तारेख को या उसके पश्चात् यथासंभव शीघ्र, अन्तरि बैंक के लिए गठित कर्मचारी भविष्य निधि और या उपदान निधि के न्याय को, या अन्यथा, जैसा अन्तरि बैंक निदेश दे, अन्तरक बैंक के कर्मचारियों फायदे के लिए, न्याय में श्रावित सब धन और वित्तियन अन्तरि कर देंगे।

परन्तु यह कि ऐसे पश्चात्पूर्वी न्यायों, वित्तियनों के मुख्य में किसे कमी के लिए, या विहित तारेख के पहले किए गए किए कार्य, उपधा, या व्यतिक्रम को बाबत दाया नहीं होंगे।

14. अन्तरि बैंक, ऐसे विवरण और जानकारी भारतीय रिजर्व बैंक को भेजेगा, जो भारतीय रिजर्व बैंक इस स्कीम के कार्यान्वित करने के संबंध में समय-समय पर अपेक्षा करे।

15. अन्तरि बैंक, अन्तरक बैंक के कार्यकलाप का विवरण, ऐसे प्राप्ति में और ऐसे कालिक अंतरालों पर, जो भारतीय रिजर्व बैंक इस निमित्त विनिर्दिष्ट करे, अन्तरक बैंक के जेयरधारकों को भेजेगा। ऐसे विवरणों का भेजा जाना तब रोका जाएगा जब रिजर्व बैंक ऐसा निदेश दे।

16. किसे ऐसे सूचना या अन्य संसूचना के बारे में, जिसकी अन्तरि बैंक द्वारा दे जाने का अपेक्षा का जात है, उस दशा में यह समझा जाएगा कि उसे सम्पूर्ण रूप में दे दिया गया है, यदि अन्तरक बैंक का पुस्तकों में रजिस्ट्र कर पते पर, जहां तक कि कोई तथ्य पता

अन्तरि, बैंक के पुस्तकों में रजिस्ट्र कर न हो, प्रेषित को संबोधित किया गया है और उसे पूर्व-संदन सामान्य डाक में भेज दिया गया है, और ऐसे सूचना उसे डाक में डाले जाने के पश्चात् अडनालम घंटे के अवसान पर तामाल क गये समझ जायेंगे। इसके अतिरिक्त किसे ऐसा सूचना या संसूचना को, जो सार्वजनिक हित का हो, एक या अधिक दैनिक समाचार पत्रों में, जिसका परिचालन ऐसे स्थानों पर हो जहां बैंक अपने कारबार का व्यवहार कर रहा था, विज्ञापित किया जायेंगे।

17. यदि इस स्कीम के किसे उपबन्ध का निर्वचन करने समय कोई शर्त उत्पन्न होता है तो मामले को भारतीय रिजर्व बैंक को निरदिष्ट किया जाएगा और उसका राय निश्चायक होगा और अन्तरि बैंक और अन्तरक बैंक, दोनों पर तब इस प्रत्येक बैंक के सभी सदस्यों, निरीपकर्ताओं और अन्य वेतनग्राहों तथा कर्मचारियों पर भी, और किसे ऐसे अन्य व्यक्ति पर जिसका उन बैंकों में से किसे के संयंत्र में कोई अधिकार या अधिकार है, आबद्धक होंगे।

18. यदि इस स्कीम के उपबन्धों को प्रभाव करने में कोई कठिनाई उत्पन्न होता है तो केन्द्रिय सरकार, अन्तरक और अन्तरि बैंकों को या उनमें से किसे को, ऐसे निदेश, जो इस स्कीम में अमंगल न हो जाए, कर सकेगा, जो केन्द्रिय सरकार को, भारतीय रिजर्व बैंक से परामर्श करने के पश्चात् कठिनाई दूर करने के प्रयोजन के लिए आवश्यक या उपयुक्त प्रतीत हो।

[सं 17/12/85-सी. ओ III (ii)]

अनुसूची

बैंककारी विनियमन अधिनियम 1949 (1949 का 10) के, धारा 45 को, उपधारा 7 के अधीन केन्द्रिय सरकार द्वारा स्वीकृत लक्ष्य: कमजियन बैंक लि. के विवरण का योजना के साथ मेलना और उसके अण के रूप में अनुसूच.

क्रम सं.	कर्मचार का नाम	अन्तरक बैंक में पद
1	2	3
संबंध		
1	ज के धवन (निर्वाचनाधन)	प्रबंधक प्रधान कार्यालय (भूतपूर्व प्रबंधक महाराज)
2	आर. के साहू	प्रबंधक, गया
3	भूपिन्दर मिश्र	प्रबंधक, श्रोतपुर, नई दिल्ली
4	एम के. भट्टोबा	परिया प्रबंधक, आर० ए० ए० माधपुर
5	आर. म. तीरथाल	ए० ओ० मेरठ (भूतपूर्व प्रबंधक, चारपुर)
6	अशोक शर्मा (निर्वाचनाधन)	प्रबंधक, बूटा मंड, जाधपुर
7	आर. एम. खण्डार	प्रबंधक, ओरिसा हाऊस, बम्बई
8	बी. के. अवस्था	प्रबंधक, इलाहाबाद
9	वाई एम शर्मा	प्रबंधक, ए० ओ० लखनऊ (भूतपूर्व प्रबंधक, कोनत)
10	वाई. ए. गुप्ता	प्रबंधक रिवाड़ (भूतपूर्व प्रबंधक गुड़गांव)
11	जे. एम. मैना (निर्वाचनाधन)	प्रबंधक, चादत, चौक, दिल्ली
12	एम के दल (निर्वाचनाधन)	प्रबंधक, नागपुर
13	के. एम. बजाज	प्रबंधक, लाव कृष्ण, नई दिल्ली

1	2	3	1	2	3
सर्वश्र			सर्वश्र		
11 सुभाष नन्दा	लेखापाल मकराना		35 उल्फ राज म हावरा	प्रबन्धक कमला नगर, नई दिल्ली ।	
15 बी व कपूर	भूतपूर्व प्रबन्धक एरिया कार्यालय		(निलबनाधान)	(अचल कार्यालय दिल्ली में निर्वाह	
	जालधर, वर्तमान लेखापाल,			भन्ने पर) ।	
	ए० आ० जालधर		36 ए०० के० मूर	प्रबन्धक, भोगल नई दिल्ली ।	
16 नरन्द्र वपुर	प्रबन्धक एरिया कार्यालय लखनऊ ।		37 ट० आर० सठ	प्रबन्धक, आजादपुर, नई दिल्ली ।	
17 व र शर्मा (निलबनाधान)	प्रभाग अधिकार राजियावाद ।		(निलबनाधान)		
18 एम एम सगडा	(भूतपूर्व प्रबन्धक राजा गार्डन		38 एम० ए० गोयल	एरिया प्रबन्धक आर० बी० आई	
	नई दिल्ली) ।			कक्ष प्रधान कार्यालय, नई	
	प्रबन्धक, आर० ए० म० प्रधान			दिल्ली ।	
	कार्यालय ।		39 जी एम बजाज	लेखापाल कर्मारा गेट दिल्ली ।	
19 एम० एल० रातिया	पदभक्त कैपिटल मिक्स्ड विभाग		40 ईश्वर सिंह	प्रबन्धक, मकराना ।	
	प्रधान कार्यालय (भूतपूर्व		41 मुलेमान मनम	विक्रम अधिकारी, एरिया कार्यालय	
	प्रबन्धक कनाट मर्कम, नई		(निलबनाधान)	मेरठ ।	
	दिल्ली ।		42 के० एल० गडा	प्रबन्धक एम० टी० सी० नई	
20 बी० एम० मन्हाड़ा	(भूतपूर्व प्रबन्धक, पटियाला)			दिल्ली ।	
	वर्तमान ज० ट० गड		43 परबान चडडा	लेखापाल प्रभाग बल्लभगढ़ ।	
	जालधर ।		(निलबनाधान)		
21 ड० रामनाथन	प्रबन्धक (विक्रम) मद्रास ।		44 ए०० आर० साहनी	प्रबन्धक, एरिया कार्यालय, चण्डीगढ़	
(निलबनाधान)			(निलबनाधान)		
22 सुरेश चन्द	भूतपूर्व विदेशी मुद्रा कार्यभार,		45 ए० के० शर्मा	प्रबन्धक किशतल ।	
	मद्रास, अब उप प्रबन्धक, फाट,		46 एम० एम० ब्रैदी	मुख्य प्रबन्धक, केन्द्रिय लेखा नई	
	बम्बई ।			दिल्ली । (अन्तर्राष्ट्रीय बैकिंग	
23 अरजुन मिश्र	प्रबन्धक जम्मू ।		47 गुरमोहन सिंह	प्रभाग प्रधान कार्यालय दिल्ली) ।	
24 सुधर कुमार सेठ	ए० आ० जालधर ।		(निलबनाधान)		
	(भूतपूर्व प्रबन्धक नलवण्ट भाई) ।		48 आर० के० भास्कर	प्रबन्धक हापुड ।	
25 स० एम० चट्टा	प्रबन्धक भिवानी ।		(निलबनाधान)		
(निलबनाधान)			49 गन श सेठ	एरिया प्रबन्धक, ऋण विभाग,	
26 बजरंग मिश्र तैयार	प्रबन्धक, आजादपुर, नई दिल्ली ।			नई दिल्ली ।	
27 आर० के० मेहन	उप प्रबन्धक बिना ।		50 परबान कुमार शर्मा	प्रबन्धक, विदेशी मुद्रा विभाग, नई	
(निलबनाधान)				दिल्ली ।	
28 जोरावर मिश्र साहू	मुख्य प्रबन्धक, जानन कार्यालय		51 जी० एल० शरकर	एरिया प्रबन्धक, प्रधान कार्यालय ।	
(निलबनाधान)	नई दिल्ली ।		(निलबनाधान)		
	(पहल छ नगर म)		52 अरुण कुमार महता	लेखापाल ए० आ० जालधर ।	
29 स० के रामपाल	प्रबन्धक, विदेशी मुद्रा विभाग,		53 के० सी० शार	केन्द्रिय जीन ए० आ० न० दिल्ली ।	
	कनाट मर्कम नई दिल्ली			(भूतपूर्व प्रबन्धक कोकोन) ।	
	(भूतपूर्व प्रबन्धक औपेरा हाऊस		54 आ० के० दुर्गा प्रसाद	प्रबन्धक अन्तर्राष्ट्रीय बैकिंग प्रभाग,	
	बम्बई में) ।			प्रधान कार्यालय ।	
30 एम० के० बोहरा	प्रबन्धक बोल वाडा बम्बई ।		55 बी० पी० शर्मा	लेखापाल, कानपुर ।	
(निलबनाधान)					
31 व० एम० आनन्द	एरिया प्रबन्धक लखनऊ ।		56 मनाश आत्रेय	प्रबन्धक आगरा ।	
32 एम० एम० मन्हाड़ा	लेखापाल (पटल गाल खाल म) ।		(निलबनाधान)		
(निलबनाधान)			57 ए०० एल० कादरी	उप-महा प्रबन्धक, प्रधान कार्यालय	
33 ए० एल० लाम्बा	एरिया प्रबन्धक बम्बई ।			नई दिल्ली ।	
(निलबनाधान)			58 सुखिन्दर मिश्र छाबड़ा	भूतपूर्व प्रबन्धक विक्रम नगर,	
34 आर० एन० मन्हाड़ा	लेखापाल, कर्मारा गेट, दिल्ली ।			काम म गैरहाजिर ।	

1	2	3
सर्वश्र.		
59. श्री. सुष्मा शंख	लेखापाल, आर. ए. सा. प्रधान कार्यालय ।	
60. श्री. बा. हार्डा	आर. ए. सा. मायापुरा, नई दिल्ली । (भूतपूर्व लेखापाल प्राध्यापक हाऊस बम्बई) ।	
61. आर. एन. बोहरा	प्रबंधक, पोर्ट, बम्बई ।	
62. ए. ए. जौना	प्रबंधक (पहले नामपुर में), ए. सा. बम्बई ।	
63. ए. एस. खन्ना	एरिया प्रबंधक, एरिया कार्यालय जालंधर ।	
64. श्री. एस. लक्ष्मी	एरिया प्रबंधक, एरिया कार्यालय लखनऊ ।	
65. श्री. एस. मन्ना	प्रबंधक, रायपुर ।	
66. जस्मर सिंह	प्रबंधक, ए. प्रो. जालंधर ।	
67. आर. के. सूद (निवृत्तनाथीन)	प्रबंधक, काठमांडू । (पहले देहली आत में)	
68. रमेश चन्द (निवृत्तनाथीन)	प्रबंधक, अमरावती ।	
69. एस. सी. खन्ना	प्रबंधक, गुडगांव । (भूतपूर्व प्रबंधक, नियाली) ।	
70. डॉ. आर्डी. एस. गणपत	प्रबंधक, लाजपत नगर, नई दिल्ली ।	
71. श्री. या. गुप्ता	प्रबंधक, नारियल रोड, नई दिल्ली ।	
72. एस. के. खुराना	प्रबंधक, गृहपर ।	
73. ए. क. सप्रवान	प्रबंधक, गिलर गंज, लुधियाना ।	
74. प्रमोद कुमार मिश्र	प्रबंधक, आर. ए. सा. मायापुरा, प्रधान कार्यालय ।	
75. खन्ना मिश्र	प्रबंधक, मायापुरा, नई दिल्ली ।	
76. के. एस. साटा	प्रबंधक, ब्रूय बाजार, कलकत्ता ।	

S.O. 625(E).—Whereas on an application made by the Reserve Bank of India under sub-section (1) of section 45 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949) the Central Government has made, under sub-section (2) of the said section 45 an order of moratorium in respect of the Lakshmi Commercial Bank Ltd., under sub-section (2) of the said section.

And whereas the Reserve Bank of India in exercise of the powers conferred by sub-section (4) of section 45 of the said Act has prepared a scheme for the amalgamation of the Lakshmi Commercial Bank Ltd., New Delhi with Canara Bank.

And whereas the Reserve Bank after having sent the said scheme in draft to the banks concerned in accordance with the provisions of sub-section (6) of the said section and after having considered the suggestions and objections received in regard to the said scheme has modified that scheme and forwarded it to the Central Government for sanction.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (7) of section 45 of the said Act, the Central Government hereby sanctions the scheme on and subject to the terms and conditions hereinafter mentioned.

(1) The Lakshmi Commercial Bank Ltd., New Delhi shall be the transferor bank and the Canara Bank shall be the transferee bank.

(2) As from the date which the Central Government may specify for this purpose under sub-section (7) of section 45 of the said Act (hereinafter referred to as the prescribed date) all rights, powers, claims, demands, interest, authorities, privileges, benefits, assets and properties of the transferor bank, movable and immovable, including premises subject to all incidents of tenure and to the rents and other sums of money and covenants reserved by or contained in the leases or agreements under which they are held, all office furniture, loose equipment, plant, apparatus and appliances, books, papers, stocks of stationery, other stocks and stores, all investments in stocks, shares and securities, all bills receivable in hand and in transit, all cash in hand and on current or deposit account (including money at call or short notice) with banks, bullion, all book debts, mortgage debts and other debts with the benefit of securities, or any guarantee therefore, all other, if any, property rights and assets benefit of all guarantors in connection with the business of the transferor bank shall, subject to the other provisions of this scheme, stand transferred to, and become the properties and assets of, the transferee bank; and as from the prescribed date all the liabilities, duties and obligations of the transferor bank shall be and shall become the liabilities, duties and obligations of the transferee bank to the extent and in the manner provided hereinafter.

Without prejudice to the generality of the foregoing provisions, all contracts, deeds, bonds, agreements, powers of attorney, grants of legal representation and other instruments of whatever nature subsisting or having effect immediately before the prescribed date shall be effective to the extent and in the manner hereinafter provided against or in favour of the transferee bank and may be acted upon as if instead of the transferor bank the transferee bank had been a party thereto or as if they had been issued in favour of the transferee bank.

If on the prescribed date any suit, appeal or other legal proceedings of whatever nature by or against the transferor bank is pending, the same shall not abate, or be discontinued or be in any way prejudicially affected, but shall subject to the other provisions of this scheme, be prosecuted and enforced by or against the transferee bank.

If according to the laws of any country outside India the provisions of this scheme, by themselves, are not effective to transfer or vest any asset or liability situated in that country which forms part of the undertaking of the transferor bank to or in the transferee bank, the affairs of the transferor bank in relation to such assets or liability shall, on the prescribed date, stand entrusted to the chief executive officer for the time being of the transferee bank and the

chief executive Officer may exercise all powers and do all such acts and things as would have been exercised or done by the transferor bank for the purpose of effectively winding up its affairs. The chief executive officer shall take all such steps as may be required by the laws of any such country outside India for the purpose of effecting such transfer or vesting and in connection therewith the chief executive officer may, either himself or through any person authorised by him in this behalf, realise any assets or discharge any liability of the transferor bank and transfer the net proceeds thereof to the transferee bank.

(3) The books of the transferor bank shall be closed and balanced and balance sheet prepared in the first instance as at the close of business on the 27th April 1985 and thereafter as at the close of business on the date immediately preceding the prescribed date and the balance sheets shall be got audited and certified by the chartered accountant or a firm of chartered accountants approved or nominated by the Reserve Bank of India for the purpose.

A copy each of the balance sheets of the transferor bank prepared in accordance with the provisions of the foregoing paragraph, shall be filed by the transferor bank with the Registrar of Companies as soon as possible after it has been received and thereafter the transferor bank shall not be required to prepare balance sheets or profit and loss accounts, or to lay the same before its members or file copies thereof with the Registrar of Companies or to hold any annual general meeting for the purpose of considering the balance sheet and accounts or for any other purpose or to comply with the provisions of section 159 of the Companies Act, 1956, and it shall not thereafter be necessary for the Board of Directors of the transferor bank to meet as required by section 285 of that Act.

(4) I. The transferee bank shall, in consultation with the transferor bank, value the property and assets and reckon the liabilities of the transferor bank in accordance with the following provisions, namely:

(a) Investments other than Government securities shall be valued at the market rates prevailing on the day immediately preceding the prescribed date.

(b) (i) Government securities shall be valued as on the day immediately preceding date in accordance with the principle laid down in the notification issued by Reserve Bank of India for the purpose of section 24 of the Banking Regulation Act, 1949.

(ii) The securities of the Central Government such as Post Office Certificates, Treasury Savings Deposit Certificates and any other securities or certificates issued under the small savings scheme of the Central Government shall be valued at their face value or the encashable value as on the said date, whichever is higher.

(iii) Where the market value of any Government security such as the Zamindari Abolition Bonds or other similar security in respect of which the principal is payable in instalments is not ascertainable or is, for any reason, not considered as reflecting the

fair value thereof or as otherwise appropriate, the security shall be valued at such an amount as is considered reasonable having regard to the instalments of principal and interest remaining to be paid, the period during which such instalments are payable, the yield of any security issued by the Government to which the security pertains and having the same or approximately the same maturity, and other relevant factors.

(c) Where the market value of any security, share, debenture, bond or other investment is not considered reasonable by reason of its having been affected by abnormal factors, the investment may be valued on the basis of its average market value over any reasonable period.

(d) Where the market value of any security, share, debenture, bond or other investment is not ascertainable, only such value, if any, shall be taken into account as is considered reasonable, having regard to the financial position of the issuing concern, the dividends paid by it during the preceding five years and other relevant factors.

(e) Premises and all other immovable properties and any assets acquired in satisfaction of claims shall be valued at their market value.

(f) Furniture and fixtures, stationery in stock and other assets, if any, shall be valued at the written down value as per books or the realisable value as may be considered reasonable.

(g) Advances including bills purchased and discounted, bank debts and sundry assets, will be scrutinised by the transferee bank and the securities, including guarantees, held as cover therefor examined and verified by the transferee bank. Thereafter the advances, including portions thereof, will be classified into two categories, namely, "Advances considered good and readily realisable" and "Advances considered not readily realisable and/or bad or doubtful of recovery".

II. Liabilities for purposes of this scheme shall include all contingent liabilities which the transferee bank may reasonably be expected or required to meet out of its own resources on or after the prescribed date.

III. Where the valuation of any asset cannot be determined on the prescribed date, it may, with the approval of the Reserve Bank of India, be treated partly or wholly as an asset realisable at a later date.

In the event of any disagreement between the transferee bank and the transferor bank as regards the valuation of any asset and/or the classification of any advance and/or the determination of any liability, the matter shall be referred to the Reserve Bank of India, whose opinion shall be final, provided that until such an opinion is received the valuation of the item or portion thereof by the transferee bank shall provisionally be adopted for the purpose of this scheme.

It shall be competent for the Reserve Bank in the event of its becoming necessary to do so, to obtain such technical advice as it may consider to be appropriate in connection with the valuation of any such item of asset or determination of any such item of

liability, and the cost of obtaining such advice shall be payable in full out of the assets of the transferor bank.

The valuation of the assets and the determination of the liabilities in accordance with the foregoing provisions shall be binding on both the banks and the members and creditors thereof.

(5) In consideration of the transfer of the property and the assets of the transferor bank to the transferee bank the transferee bank shall discharge the liabilities of the transferor bank to the extent mentioned in this and the following clauses, namely;

(a) Any sums deposited by any employee of the transferor bank with that bank as staff security deposits together with interests, if any, accrued thereon up to the prescribed date and all other outside liabilities as on the prescribed date excluding deposits shall be paid or provided for in full.

EXPLANATION :

For the purpose of this paragraph, interest payable on a deposit up to the prescribed date shall be regarded as part of the concerned deposit.

(b) In respect of every savings bank account or current account or any other deposit including a fixed deposit, cash certificate, monthly deposit, deposit payable at call or short notice or any other deposit by whatever name called with the transferor bank and every other account not covered by clause (a), including interest to the extent payable under this scheme, the transferee bank shall open with itself on the prescribed date a corresponding and similar account in the name of the respective holder(s) thereof crediting thereto the pro rata share available in respect of each of the accounts out of the assets referred to in paragraph (4) as valued for the purposes of this scheme on the prescribed date, after excluding from the said assets as so valued the advances considered not readily realisable or bad or doubtful of recovery, any asset or portion of an asset not valued on the prescribed date and any amount needed for the payments or provisions mentioned at clause (a) above and after adding to the said assets as so valued the aggregate amount of the payments made in terms of clause (a) (i) of paragraph 2 of the moratorium order dated the 27th April 1985 issued to the transferor bank :

Provided that any payment made from a deposit account on, or after the close of business on 27th April 1985 and before the prescribed date, shall be reckoned towards the amount to be credited under this sub-paragraph and, accordingly the amount to be credited shall be the pro rata share less the amount of such payment :

Provided further that where the transferee bank entertains a reasonable doubt about the correctness of the entries made in any particular account it may with the approval of the Reserve Bank, withhold the credit to be made in that account in terms of clause (b) above till the transferee bank is able to ascertain the correct balance in such accounts.

EXPLANATION :

The term 'pro rata' shall, insofar as it occurs in this paragraph, mean in proportion to the respective amounts remaining due as at the close of business on the 27th April 1985 (together with interest payable up to the date immediately preceding the prescribed date) and shall, insofar as it occurs elsewhere in this scheme, mean 'in proportion to the respective amounts remaining due at the time of the payment or distribution'.

(c) After the credits referred to in clause (b) above have been afforded, the transferee bank shall, with the least possible delay but in any case not later than three months from the prescribed date, furnish to the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation established under the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation Act, 1961 (hereinafter referred to as the Corporation) a list complying in all respects with the requirements of sub-section (1) of section 18 of that Act and thereafter whenever amounts referred to in sub-section (2) of section 18 of that Act are received from the Corporation, the transferee bank shall credit each of the accounts referred to in clause (b) above, within seven days from the date or dates on which the amounts are received, to the extent of the sums due to that account in accordance with sub-section (2) of section 18 of that Act :

Provided that :—

(a) if any account referred to in clause (b) has been closed or has matured for payment at the time when any amount for credit to that account is received from the Corporation, the payments to the person entitled to the said amount shall be made by the transferee bank in cash ;

(b) in case the person entitled to any amount referred to in clause (b) cannot be found or is not readily traceable, provision for the amount due to such person shall be made and accounted for separately on the books of the Corporation itself and it shall not be necessary for the Corporation to pay the amounts to the transferee bank unless the person entitled to the amount is found or traced and the Corporation has decided to make the payment in respect of that person through the transferee bank.

(c) On the prescribed date, the entire amount of the paid up capital and reserves of the transferor bank shall be treated as provision for bad and doubtful debts and depreciation in other assets of the transferor bank and the rights of the members of the transferor bank shall, in relation to the transferee bank, be as provided for in paragraph (6) below :

(6) In respect of

(a) every account mentioned in clause (b) of the preceding paragraph, the balance in the account, if any, remaining uncredited in terms of that clause and clause (c) and

- (b) every share in the transferor bank, the amount of which was treated as paid-up towards share capital by or on behalf of each shareholder immediately before the prescribed date and/or amount paid on account of the calls made by the transferee bank in pursuance of clause (i) below ;

shall be treated as a collection account and may be entered as such in the books of the transferee bank and payments against the account shall be made in the following manner, namely;

(i) (a) the transferee bank shall, in the first instance, call upon every person who on the prescribed date was registered as the holder of a deferred share in the transferor bank (or would have been entitled to be so registered) to pay within three months from such date or dates as may be specified, the uncalled amount remaining unpaid by him in respect of such share or shares and the calls in arrears, if any and thereafter, if it is found to be so necessary, every person who was, as on the prescribed date, registered as the holder of an ordinary share of the transferor bank (or would have been entitled to be so registered) to pay within three months from such date or dates as may be specified, the uncalled amount remaining unpaid by him in respect of such share or shares or the calls in arrears, if any ;

(b) the transferee bank shall take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce the payment of the amounts due under clause (a) together with interest at six per cent per annum for the period of the default ;

(ii) the transferee bank shall in respect of the advances, bills purchased and discounted, book debts and sundry debts and other assets, which are classified as "Advances considered not readily realisable and/or bad or doubtful of recovery", or which are or may be realisable wholly or partly after the prescribed date in terms of paragraph (4) above, take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce payment, provided, however, that if the amount of a debt or asset exceeds Rs. 50,000, the transferee bank shall not except with the approval of the Reserve Bank of India ;

(a) enter into a compromise or arrangement with the debtor or any other person or write off any such debt or asset.

(b) sell or otherwise dispose of any securities transferred to it or any asset taken over by it.

(iii) the transferee banks shall in addition take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce the payment of the amounts, if any, awarded as damages by the High Court against any promoter, director, manager or other officer of the transferor bank under section 45L of the Banking Regulation Act, 1949, read with section 45H thereof and also with section 543 of the Companies Act, 1956 ;

(iv) the transferee bank may, out of the realisations effected by it on account of the items mentioned in clauses (i), (ii) and (iii) above, make payment or provision in respect of any contingent liability to

the extent that the provision made therefor under paragraph (5) (a) proves to be inadequate, as also with the prior approval of the Reserve Bank, in respect of any liability whether contingent or absolute which was not assessed in terms of paragraph (4) above and has arisen or been discovered on or after the prescribed date ;

(v) the transferee bank shall out of the realisations effected by it on account of the items mentioned in clauses (i), (ii) and (iii) above after deducting therefrom the expenditure incurred for the purpose and, with the approval of the Reserve Bank of India, such other expenses as may be considered reasonable and the amount appropriated therefrom in terms of clause (iv), above, or out of the balance, if any, which may be available from out of the provision in respect of contingent liabilities as reckoned for the purposes of this scheme after the extent of such liabilities has finally been ascertained.

(a) pay to the Corporation the amount received by the transferee bank from the Corporation under sub-section (2) of section 18 of the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation Act, 1961 and the amount, if any, provided for by the Corporation, and

(b) pay, in the case of depositors in respect of whom no amounts have been received by the transferee bank from the Corporation, the amounts due in respect of the collection accounts, and in the case of depositors in respect of whom any amounts have been received by the transferee bank from the Corporation or have been provided for by the Corporation the balance if any due to them in their collection accounts after the amounts due from the said accounts to the Corporation in respect of the payment made or provided for by the Corporation have first been paid in accordance with the provisions of sub-clause (a) above ;

Provided that the amount due to the Corporation shall, if it becomes necessary so to do, be provided for in the books of the transferee bank and be paid to the Corporation in the manner specified in clause (b) of regulation 22 of the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation General Regulations, 1961.

Provided further that the transferee bank shall make the payments referred to in clause (b) above,

(i) if the corresponding or similar account mentioned in clause (b) of paragraph (5) has not been closed or has not matured for payment, by credit to that account, and

(ii) if the said account has been closed or has matured for payment, in cash ;

(vi) The amounts due to the Corporation in terms of sub-clause (a) of clause (v) above and the amounts due to the collection accounts of the depositors in terms of sub-clause (b) of that clause shall rank equally among themselves, and if they cannot be paid in full shall abate in equal proportions ;

(vii) After the payments referred to in clause (v) of this paragraph have been made or provided for in full, the transferee bank shall, out of the balance of the amounts referred to in clause (v) which may be available to it, make payments pro rata towards the amounts, if any, due to the accounts of the former shareholders, of the transferor bank in the manner and to the extent specified below :

- (a) in the first place, the amounts, if any, due to the accounts of the former preference shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made ;
- (b) in the second place, the amounts, if any, due to the accounts of the former ordinary shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made; and thereafter ;
- (c) in the third place, the amounts, if any, due to the accounts of the former deferred shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made ;
- (d) after all the amounts mentioned in sub-clauses (a), (b) and (c) above have been paid in full, the surplus, if any, remaining in the hands of the transferee bank shall be distributed pro rata among the former ordinary shareholders of the transferor bank.

Provided that if any question arises whether any amounts are due against an account mentioned in any of the above sub-clauses, it shall be referred to the Reserve Bank of India whose decision thereon shall be final.

(viii) the amounts due to the collection accounts referred to in this paragraph shall be deemed to be a liability of the transferee bank only to the extent provided for in this scheme ;

(ix) on the expiry of twelve years from the prescribed date or such earlier period as the Central Government after consulting the Reserve Bank of India may specify for this purpose, any item referred to in clause (ii) of this paragraph which may not have been realised by that date shall be valued by the transferee bank in consultation with the Reserve Bank of India and the transferee bank shall distribute any amount or amounts determined in the light of that valuation after deducting therefrom first any sum necessary for meeting the liabilities referred to in clause (iv) of this paragraph which may remain unsatisfied as on that date in the order and the manner provided in clause (v), (vi) and (vii) above.

(x) The transferee bank shall invest such moneys realised on account of items mentioned in the preceding clauses (i), (ii) and (iii) as are not likely to be required by it for immediate payment, in interest bearing deposits with itself or with any other bank or banks, in such manner and for such periods as may be appropriate having regard to the facts and circumstances of the case or as the Reserve Bank of India may direct. The interest accrued shall be applied for meeting the liabilities referred to in clause (iv), (v) (vi) and (vii) in the manner indicated therein

(7) Notwithstanding anything to the contrary contained in any contract, express or implied, interest shall be paid in respect of the new accounts opened with the transferee bank in terms of paragraph (5) and credited in accordance with the provisions of that or the next succeeding paragraphs only at such rates as the transferee bank may allow.

(8) No depositor or other creditor of the transferor bank shall be entitled to make any demand against the transferor bank or the transferee bank in respect of any liability of the transferor bank to him except to the extent prescribed by this scheme.

(9) No suit or other legal proceeding shall lie against the Central Government, the Reserve Bank of India or the transferee or the transferor bank for anything which is in good faith done or intended to be done in pursuance of this scheme.

(10) All the employees of the transferor bank other than those specified in the schedule referred to in the succeeding paragraph shall continue in service and be deemed to have been appointed by the transferee bank at the same remuneration and on the same terms and conditions of service as were applicable to such employees immediately before the close of business on 27th April 1985.

Provided that the employees of the transferor bank who have, by notice in writing given to the transferor or the transferee bank at any time before the expiry of one month next following the date on which this scheme has been sanctioned by the Central Government, intimated their intention of not becoming employees of the transferee bank, shall be entitled to the payment of such compensation, if any, under the provisions of the Industrial Disputes Act, 1947 and such pension, gratuity, provident fund and other retirement benefits as may be ordinarily admissible under the rules or authorisations of the transferor bank immediately before the close of business on 27th April 1985.

Provided further that the transferee bank shall in respect of the employees of the transferor bank who are deemed to have been appointed as employees of the transferee bank be deemed also to have taken over the liability for the payment of retrenchment compensation in the event of their being retrenched while in the service of the transferee bank on the basis that their service has been continuous and has not been interrupted by their transfer to the transferee bank.

(11) The persons specified in the schedule annexed to this scheme shall on the prescribed date cease to be the employee of the transferor bank and notwithstanding anything contained in any law for the time being in force or any agreement or contract, the persons so specified shall be entitled to and only to such pension, gratuity, provident fund and other retirement benefits as may be ordinarily admissible to them under the rules or authorisations of the transferor bank immediately before the close of business on 27th April 1985.

Provided that the compensation, if any, for the loss of employment, so far as it relates to the unexpired

portion of any contract of service, shall be such and only such as may be determined by the Reserve Bank (whose determination in this respect shall be final and binding).

Provided further that nothing herein shall be deemed to prevent the transferee bank from re-employing any person whose name has been specified in the schedule annexed to this scheme in such capacity and on such terms and conditions as the transferee bank may deem fit.

(12) The transferee bank shall, on the expiry of period not longer than three years from the date on which this scheme is sanctioned, pay or grant to the employees of the transferor bank the same remuneration and the same terms and conditions of service as are applicable to the employees of corresponding rank or status of the transferee bank subject to the qualifications and experience on the said employees of the transferor bank being the same as or equivalent to those of such other employees of the transferee bank.

Provided that if any doubt or difference arises as to whether the qualifications or experience of any of the said employees are the same as or equivalent to the qualifications and experience of the other employees of corresponding rank or status of the transferee bank or as to the procedure of principles to be adopted for the fixation of the pay of the employees in the scales of pay of the transferee bank, the doubt or difference shall be referred to the Reserve Bank of India whose decision thereon shall be final.

(13) The trustees or administrators of any provident fund and/or gratuity fund constituted for the employees of the transferor bank or as the case may be the transferor bank shall on or as soon as possible after the prescribed date transfer to the trustee of the employees provident fund and/or gratuity fund constituted for the transferee bank, or otherwise as the transferee bank may direct, all the monies and investments held in trust for the benefit of the employees of the transferor bank.

Provided that such latter trustees shall not be liable for any deficiency in the value of investments, or in respect of any act, neglect, or default done before the prescribed date.

(14) The transferee bank shall submit to the Reserve Bank of India such statements and information as may be required by the Reserve Bank of India from time to time regarding the implementation of this scheme.

(15) The transferee bank shall furnish to the shareholders of the transferor bank a statement of affairs of the transferor bank in such form and at such periodical intervals as the Reserve Bank of India may specify in this behalf. The sending of such statements shall be discontinued when so directed by the Reserve Bank.

(16) Any notice or other communication required to be given by the transferee bank shall be considered to be duly given if addressed and sent by pre-paid

ordinary post to the addressee at the address registered in the books of the transferor bank, until a new address is registered into the books of the transferee bank, and such notice shall be deemed to be served on the expiry of fortyeight hours after it has been posted. Any notice or communication which is of general interest shall be advertised in addition in one or more daily newspapers which may be in circulation at the places where the transferor bank was transacting its business.

(17) if any doubt arises in interpreting any of the provisions of this scheme, the matter shall be referred to the Reserve Bank of India and its opinion shall be conclusive and binding on both the transferee and transferor banks, and also on all the members, depositors and other creditors and employees of each of these banks and on any other person having any rights or liability in relation to any of these banks.

(18) If any difficulty arises in giving effect to the provisions of this scheme, the Central Government may issue to the transferor and the transferee banks or to either of them such directions not inconsistent with this scheme as may appear to the Central Government, after consulting the Reserve Bank of India, to be necessary or appropriate for the purpose of removing the difficulty.

[F. No. 17/12/85-BO(III)-(ii)]

SCHEDULE

Schedule Attached to and forming part of the Scheme for the Amalgamation of the Lakshmi Commercial Bank Ltd. As sanctioned by the Central Government under Sub-section (7) of section 45 of the Banking Regulation Act 1949 (10 of 1949)

Sl. No.	Name of the employee	Designation in the bank	transferor
1	2	3	
1.	Shri G.K. Dhawan (Under Suspension)	Manager, H.O. (formerly Manager Mehrauli)	
2.	Shri R. K. Sawhney	Manager, Gaya.	
3.	Shri Bhupinder Singh	Manager, Tri Nagar, N. Delhi.	
4.	Shri M.K. Malhotra	Asst. Manager, RAC, Mayapuri.	
5.	Shri R.C. Nautiyal	A.O. Meerut (Formerly Manager, Chandpur).	
6.	Shri Ashok Sharma (Under Suspension)	Manager, Boota Mandi, Jalandhar.	
7.	Shri R.S. Khandari	Manager, Opera House, Bombay.	
8.	Shri V.K. Awasthi	Manager, Allahabad.	
9.	Shri Y.L. Sharma	Manager, A.O. Lucknow (formerly Mgr. Cochin.).	
10.	Shri Y.P. Gupta	Manager, Rewari (formerly Manager Gurgaon)	
11.	Shri J.M. Maini (Under Suspension)	Manager, Chandnichowk Delhi	
12.	Shri S.K. Dhall (Under Suspension)	Manager, Nagpur.	
13.	Shri K.S. Bajaj	Manager, Lal Quam, N. Delhi.	

Sr. No.	Name of the person	Designation and Office	Sr. No.	Name of the person	Designation and Office
14.	Shri Dhanraj Singh	Manager, A.O. Lucknow	41.	Shri Dhanraj Singh	Manager, A.O. Lucknow
15.	Shri D. D. Dhanraj	Manager, A.O. Lucknow	42.	Shri D. D. Dhanraj	Manager, A.O. Lucknow
16.	Shri D. D. Dhanraj	Manager, A.O. Lucknow	43.	Shri D. D. Dhanraj	Manager, A.O. Lucknow
17.	Shri M.K. Sharma	Manager, A.O. Lucknow	44.	Shri H.N. Sengupta	Manager, A.O. Lucknow
18.	M.M. Chopra	Manager, A.O. Lucknow	45.	Shri M.K. Sharma	Manager, A.O. Lucknow
19.	Shri M.L. Kalia	Manager, A.O. Lucknow	46.	Shri H.S. Bedi	Manager, A.O. Lucknow
20.	Shri P.S. Malhotra	Manager, A.O. Lucknow	47.	Shri Gurnam Singh	Manager, A.O. Lucknow
21.	Shri D. Ramonathan	Manager, A.O. Lucknow	48.	Shri R.K. Bhaskar	Manager, A.O. Lucknow
22.	Shri Suresh Chandra	Manager, A.O. Lucknow	49.	Shri Satish Sethi	Manager, A.O. Lucknow
23.	Shri Arjan Singh	Manager, A.O. Lucknow	50.	Shri Praveen Kumar	Manager, A.O. Lucknow
24.	Shri Sudhir Kumar Sethi	Manager, A.O. Lucknow	51.	Shri G.L. Shukla	Manager, A.O. Lucknow
25.	Shri C.S. Chudha	Manager, A.O. Lucknow	52.	Shri Anil Kumar	Manager, A.O. Lucknow
26.	Shri Balbir Singh	Manager, A.O. Lucknow	53.	Shri K.C. Ghosh	Manager, A.O. Lucknow
27.	Shri R.K. Tohan	Manager, A.O. Lucknow	54.	Shri O.K. Durga Prasad	Manager, A.O. Lucknow
28.	Shri Zameer Singh	Manager, A.O. Lucknow	55.	Shri R.P. Sharma	Manager, A.O. Lucknow
29.	Shri C.K. Rampal	Manager, A.O. Lucknow	56.	Shri Satish Chandra	Manager, A.O. Lucknow
30.	Shri N.K. Vohra	Manager, A.O. Lucknow	57.	Shri N.L. Khosla	Manager, A.O. Lucknow
31.	Shri B.M. Anand	Manager, A.O. Lucknow	58.	Shri Dhanraj Singh	Manager, A.O. Lucknow
32.	Shri Malhotra	Manager, A.O. Lucknow	59.	Shri V. Susha Rao	Manager, A.O. Lucknow
33.	Shri P.L. Lamba	Manager, A.O. Lucknow	60.	Shri B.B. H. H.	Manager, A.O. Lucknow
34.	Shri R.N. Malhotra	Manager, A.O. Lucknow	61.	Shri B.L. Vohra	Manager, A.O. Lucknow
35.	Shri Inder Raj Malhotra	Manager, A.O. Lucknow	62.	Shri K.S. Jolly	Manager, A.O. Lucknow
36.	Shri N.K. Suri	Manager, A.O. Lucknow	63.	Shri A.S. Bhandal	Manager, A.O. Lucknow
37.	Shri T.R. Sethi	Manager, A.O. Lucknow	64.	Shri P.S. Chudha	Manager, A.O. Lucknow
38.	Shri S.K. Goel	Manager, A.O. Lucknow	65.	Shri B.L. Sanwal	Manager, A.O. Lucknow
39.	Shri G.S. Bajaj	Manager, A.O. Lucknow	66.	Shri Jasmer Singh	Manager, A.O. Lucknow
40.	Shri Jaiwar Singh	Manager, A.O. Lucknow	67.	Shri R.K. Seed	Manager, A.O. Lucknow
			68.	Shri Ramchandra	Manager, A.O. Lucknow
			69.	Shri G.C. Khanna	Manager, A.O. Lucknow
			70.	Shri D.J.M. Sengupta	Manager, A.O. Lucknow
			71.	Shri V.B. Gupta	Manager, A.O. Lucknow
			72.	Shri S.K. Khanna	Manager, A.O. Lucknow
			73.	Shri A.H. Aggarwal	Manager, A.O. Lucknow
			74.	Shri P.N. Kumar	Manager, A.O. Lucknow
			75.	Shri Dhanraj Singh	Manager, A.O. Lucknow
			76.	Shri B.L. Vohra	Manager, A.O. Lucknow

का. आ. 626(अ):—बैंकिंग विनियमन अधिनियम, 1949 (1949 का 10) की धारा 45 की उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए और दिनांक 27 अप्रैल, 1985 को इस मंत्रालय की अधिसूचना सं. एफ. टा. एस./1/85-बी. ओ.-III में संशोधन करते हुए, केन्द्रीय सरकार, एतद्द्वारा निदेश देता है कि लक्ष्मी कमर्शियल बैंक लि., नई दिल्ली के संबंध में उसके द्वारा जारी किए गए स्थगनादेश 23 अगस्त, 1985 तक जिसमें यह तारीख भी शामिल है, लागू रहेगा।

[सं. 17/12/85-बी. ओ.-III(iii)]

शरद केलकर, अपर सचिव

S.O. 626(E).—In exercise of the powers conferred by sub-section (2) of section 45 of the Banking Regulation Act, 1949(10 of 1949), and in modification of this Ministry's Notification F. No. TS/1/85-BO III dated the 27th April, 1985, the Central Government, hereby directs that the order of moratorium made by it in respect of the Lakshmi Commercial Bank Limited, New Delhi, shall remain in force upto and including the August 23, 1985.

[No. F. 17/12/85-BO III-(iii)]

S. M. KELKAR, Addl. Secy.

